सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी

कॅशलेस इंडिया.. डिजीटल इंडिया...

राजभाषा रत्नसिंधु

हिंदी छमाही पत्रिका | अंक : 9

संयोजक

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी

रत्नागिरी अंचल

बैठक की झलकियां...

दीप प्रज्ज्वलन करते समय मान्यवर

स्वागत करते समय श्री. पी. मोहन न्यूक्लियर पावर कार्पोरेशन लि.

उप निदेशक महोदया डॉ.सुनीता यादव

अध्यक्ष महोदय प्रदीप कांबले

सहायक महाप्रबंधक महोदय शैलेश कुमार मालवीय

सदस्य सचिव रमेश गायकवाड

अध्यक्षीय संबोधन

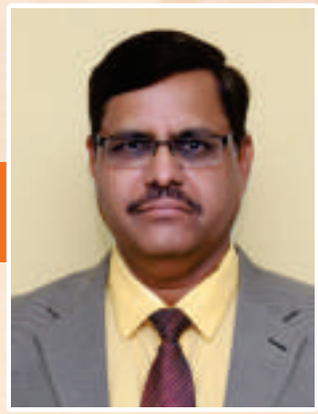

प्रिय साथियो,

राजभाषा रत्नसिंधु का यह नौवा अंक आपके हाथ में सौंपते हुए मुझे बहुत ही हर्ष हो रहा है। इस नवीनतम अंक में समिति द्वारा विविध विषयों को प्रस्तुत किया गया है। समिति का हमेशा यह प्रयास रहता है कि पाठकों को पठनीय तथा संग्रहणीय सामग्री प्रस्तुत करें।

हर एक व्यक्ति स्वयं की मातृभाषा में अपने विचारों को रखता है लेकिन राष्ट्र किस भाषा में अभिव्यक्त होगा तो विविध भाषा-भाषाई जिस भाषा में अभिव्यक्त होंगे, वही राष्ट्र की भाषा होगी। आदरणीय सुमित्रानंदन पंत जी ने कहा है कि, 'हिंदी भाषा हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति की सरलत स्त्रोत है।' हमारे देश की जनता जिस भाषा का प्रयोग आसानी से करती है, वह है हिंदी। अभी हिंदी केवल अपने देश के कोने- कोने में पहूंची हुई भाषा नहीं रही, वह तो अब विदेश में भी चली गई है और अभी अभी मॉरिशस में हिंदी संमेलन भी संपन्न हुआ । हमारा देश 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस रूप में मना रहा है। सचमुच, हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है।

सरकारी कार्यालयों के कार्यालयीन कामकाज में सुगमता के लिए राजभाषा का प्रयोग करते हैं, जिसकी लिपि देवनागरी है। हमारे क्षेत्र की भाषा मराठी है, उसकी लिपि भी देवनागरी है, इसी वजह से कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा का प्रयोग बहुत ही आसान है।

समिति ने 26 अक्तूबर 2016 को अपनी वेबसाइट का विमोचन करके नई तकनीक को अपनाकर अपना अलग-सा स्थान निर्माण करने का प्रयास किया है, जिससे हिंदी प्रेमी तथा सदस्य कार्यालय, समिति की गतिविधियों से परिचित हों तथा अद्यतन जानकारी से अवगत हो। पिछली बैठक में हमने कारोबार विकास में राजभाषा हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान इस विषय पर संगोष्ठि का आयोजन किया गया था जिससे, उपस्थित महानुभवों ने अपने विचार व्यक्त किये। इस कार्य की सफलता केवल आप सदस्य कार्यालयों के सहयोग पर ही निर्भर है। इतना ही नही हमें हमारे समिति का कार्य आदर्शवत हो, इसके लिए प्रयास करना है।

आप तथा आपके परिवार को मेरी ओर से मंगल कामनाएं ।

(प्रदीप कांबले)
अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक,
बैंक ऑफ इंडिया

संपादकीय

साथियो,

आप सभी को सविनय नमस्कार,

समिति की हिंदी पत्रिका राजभाषा रत्नासिंधु के माध्यम से आपके साथ जुड रहा हूं, यह मेरा सौभाग्य है। पत्रिका के इस नौवे अंक को बेहतर बनाने का प्रयास किया है। यह भी सहर्ष सूचित करना चाहूंगा कि, रत्नसिंधु के आठवे अंक में सम्मिलित आलेख, काव्य, पाठकों को बहुत ही पसंद आए और मुखपृष्ठ की तो बहुत ही सराहना की गई। आपकी प्रतिक्रियाओं ने पत्रिका में विविधता लाने के लिये, हमें उत्साहित किया। इसके लिए हम आपके आभारी हैं।

समिति हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु विविध नये- नये प्रयोग अपना रही है। समिति ने अपनी एक वेबसाइट बनाई है और पिछली छमाही बैठक में उपनिदेशक महोदया डॉ सुनीता यादव, अध्यक्ष श्री प्रदीप कांबले तथा श्री शैलेश कुमार मालवीय, सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा, बैंक ऑफ इंडिया, प्रधान कार्यालय के कर कमलों से विमोचन किया गया।

इस पत्रिका में विविध विषयों को स्पर्श करने को प्रयास किया गया है। महिला सशक्तिकरण, जनता के लिये बीमा का महत्त्व कस्टम के सागर कवच की जानकारी, पर्यटन, तथा विविध कथा, आलेख तथा काव्यों से भरा यह अंक आप सभी को पसंद आयेगा। आपके सुझावों के बिना यह पत्रिका अपना स्वरूप नही निखारेगी। आपके सुझावों की प्रतिक्षा के साथ...

शुभकामनाओं सहित,
धन्यवाद।

(रमेश गायकवाड)
सदस्य सचिव, एवं वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा
बैंक ऑफ इंडिया

रत्नसिंधु

अध्यक्ष
प्रदीप कांबले
अध्यक्ष एवं उप महाप्रबंधक
बैंक ऑफ इंडिया

संपादक
रमेश गायकवाड
सदस्य सचिव
एवं वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा,
बैंक ऑफ इंडिया

संपादन सहयोग

पुरुषोत्तम डोंगरे
आकाशवाणी

लक्ष्मीकांत भाटकर
सीमा शुल्क

सतीश रानडे
न्यू इंडिया एश्योरन्स कंपनी

संतोष पाटोळे
कोंकण रेलवे

सूरज माने
बैंक ऑफ इंडिया

संपर्क कार्यालय
अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय,
रत्नागिरी महाराष्ट्र - 415 639
ई-मेल -ratnasindhu10@gmail.com
वेबसाइट-http://narakasratnagiri.co.in

प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार रचनाकारों के स्वयं के है। अत: यह आवश्यक नहीं की इनसे सम्पादक मण्डल सहमत हो।

अंतरंग

1	स्वच्छ- भारत एक कदम		5
2	विमुद्रीकरण एक अवसर या चुनौती		6
3	आरोग्य बीमा		9
4	युवा पीढ़ी की सही दिशा		10
5	वर्षा जल संचयन समय की मांग		11
6	मारिशस में हिंदी का सम्माान		12
7	परिश्रम का महत्व		15
8	अभागी सुहागन		17
9	सोच		19
10	समय की सोच महिला सशक्तिकरण		21
11	महिला सशक्तिकरण		22
12	भ्रष्टाचार उन्मूलन		23
13	जीएसटी	1. वस्तू एवं सेवाकर	24
		2. वस्तू एवं सेवाकर का दायरा	27
		3. वस्तू एवं सेवाकर की विशेषताएं	28
14	हिंदी काव्य :	1. समय	22
		2. उठो युवाओं	25
15	क्षेत्रीय भाषा मराठी विभाग		
	1. केशवसुत		30
16	मराठी काव्य :		
	1. भगवंता		16
	2. सलाम		34
	3. अंधश्रध्दा		36
	4. कोंकणची माती आणि माणसं		36

आपकी राय

भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक) राजस्थान

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका ''राजभाषा रत्न सिंधु'' के 8 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद । पत्रिका का आवरण व साज-सज्जा आकर्षक एवं सराहनीय है । पत्रिका के प्रकाशन हेतु उपयोग में लाई गया सामग्री बहुत उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक एवं विचारोत्तेजक है ।

पत्रिका में सम्मिलित कीया गया डॉ. रवि गिरहे का लेख ''प्रभावी बैंकिंग के लिये कर्मचारियों की भूमिका'', सुश्री ईशा संदीप केळकर की रचना ''रूठी बारिश'', श्री वासुदेव रा. गवस का लेख ''भारत में बाल-श्रमिक समस्या'', श्री ईश्वर चंद्र गुप्ता का लेख ''एन.पी.ए.प्रबंधन आज की जरूरत'' एवं श्री सुरज महादेव माने की कविता ''आज भी याद है'' बहुत ही प्रशंसनीय है । पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को साधुवाद व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

सुभाष चंद्र शर्मा
वरिष्ठलेखाधिकारी/राजभाषा कक्ष

आयकर विभाग, कार्यालय मुख्य आयकर आयुक्त,
हिमाचल प्रदेश क्षेत्र, रेलवे बोर्ड भवन, शिमला – 171 003.

महोदय,

आपकी भेजी गई अपनी पत्रिका का अवलोकन करें । पत्रिका की प्रति भेजने के लिए हार्दिक धन्यवाद । पत्रिका का मुख-पृष्ठ बहुत ही आकर्षक है और इसमें प्रकाशित जानकारी ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी हैं ।

डॉ. सुरेंन्द्र कुमार शर्मा
सहायक दिनेशक (रा.भा.)
मुख्य आयकर आयुक्त, शिमला ।

महानिदेशालय असम राइफल्स एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति लाइटकोर, शिलांग – 793 010.

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'रत्नसिंधु' के आंठवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद । पत्रिका के सभी लेख एवं रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ इसमें अद्यतन चिंतन धारा, साहित्य-संस्कृति, राष्ट्रीय सुरक्षा एवं राजभाषा संबंधी कार्यकलापों की झलक मिलती है । वस्तुत: यह पत्रिका राजभाषा हिंदी की प्रगति एवं ज्ञानार्जन की दृष्टि से प्रेरणादायक है । उम्मीद है की पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन करती रहेगी ।

पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल के सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएँ ।

प्रकाश प्रभाकर
डिप्टी कमांडेंट, कार्य. जीएसओ-1(शिक्षा)
सचिव, नराकास कृते अध्यक्ष, नराकास, शिलांग

राष्ट्रीय बैंकिंग आंचलिक प्रबन्धक, तेलंगणा अंचल

महोदय,

आप से प्रेषित छमाही पत्रिका अंक 8 प्राप्त हुई । पत्रिका में प्रकाशित राष्ट्रीय सुरक्षा, जो आज की वातावरण की दृष्टी से अत्यंत महत्व पूर्ण है । प्रभावी बैंकिंग में प्रभावपूर्ण उपलब्धियों के पीछे कर्मचारियों की जो भूमिका है, उसे डॉ. रवि गिरहे ने अपनी लेख में वर्णित की वह महत्वपूर्ण है । कर्मचारियों को कुशल बनाने के उपाय 'ग्रीन फील्ड भविष्य की जरूरत' बहुत उपयोगी है । देश में कन्याओं की स्थिति की दर्पण है लेख 'भारत की कन्याए' ।

जी विश्वनाथ
आंचलिक प्रबन्धक
तेलंगना अंचल

भारत डायनामिक्स लिमिटेड
कंचनबाग, हैद्राबाद – 500 058. **(आंध्र प्रदेश)**

महोदय,

रत्नागिरी की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की गृह-पत्रिका 'राजभाषा रत्नसिंधु' का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ । पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद । आकर्षक मुखपृष्ठ और सुंदर छायाचित्र के साथ प्रकाशित पत्रिका देखकर आनंद हुआ । सबसे पहले समिति की अपनी वेबसाइट तैयार करवा कर प्रयोग में लाने के लिए बधाई । 'राजभाषा में काम-काज के पाँच सूत्र' की सचित्र प्रस्तुति राजभाषा में काम करने के लिए प्रेरणा देती है । 'ग्रीन बिल्डिंग', 'राष्ट्रीय सुरक्षा', 'एन.पी.ए. प्रबंधन' जैसे लेख जानकारीप्रद हैं । अन्य लेख व कविताएँ पठनीय हैं । वर्तनी-दोष पर ध्यान दें ।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाओं सहित ।

होमनिधि शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
एवं सदस्य सचिव, टॉलिक (उ)

केन्द्रीय विद्युतरसायन अनुसंधान संस्थान – कारैकुडी
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति – कारैकुडी

महोदय,

आपके प्रेषित राजभाषा पत्रिका रत्नसिंधु अंक 8 की प्रति प्राप्त हुई । धन्यवाद ।

हमें यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई की समिति ने अपनी वेबसाइट का शुभारंभ किया है । नराकास, कारैकुडी की ओर से नराकास, रत्नागिरी को हार्दिक बधाई और हिंदी के प्रचार-प्रसार में आपके द्वारा किए जा रहे सभी प्रयासों के लिए हमारी ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं ।

सधन्यवाद ।

सोमेश्वर पाण्डेय
हिंदी अधिकारी एवं सदस्य
सचिव, नराकास, कारैकुडी

कार्पोरेशन बैंक
मंगलादेवी टेंम्पल रोड, पांडेश्वर मेंगलुरू 575 001. (कर्नाटक)
प्रिय महोदय,

आप द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका ''रत्नसिंधु'' का 8 वा अंक प्राप्त हुआ । बहुत बहुत धन्यवाद । पत्रिका की साज सज्जा बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक है । आप एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका से संस्था में राजभाषा कार्यान्वयन की गति का भान होता है । पत्रिका में दिए गए लेख सूचनाप्रद और संग्रहणीय है ।

इस सुंदर अंक को प्रकाशित करने के लिए आपको एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई । मैं कामना करता हूँ कि पत्रिका की यह उत्कृष्टता सदैव बनी रहे ।

अवनीश कुमार सिमल्टी
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, उ.प. क्षेत्र.
आयकर भवन, सेक्टर–17–ई, चण्डीगढ – 160 017.
महोदय,

आपकी समिति की राजभाषा पत्रिका 'रत्नसिंधु' के 8 वे अंक की प्रति प्राप्त हो गयी । धन्यवाद ।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ रोचक, पठनीय व ज्ञानवर्धक हैं । विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों के समावेश से पत्रिका की शोभा में वृद्धि तो हुई ही है साथ ही समिति के राजभाषा प्रचार–प्रसार की झलक भी मिलती हैं । आशा है की आपकी यह पत्रिका समिति के कर्मचारियों और अधिकारियों में हिंदी के प्रचार–प्रसार में अधिक सहायक होगी और उन्हें अभिव्यक्ति का सार्थक मंच उपलब्ध करवाती रहेगी ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा
सहायक निदेशक, (राजभाषा)

इसरो, मुख्य नियंत्रण सुविधा (अन्तरिक्ष विभाग)
पी. बी. नं., हासन – 573 201, भारत
महोदय,

रत्नागिरी की हिन्दी अर्ध वार्षिक–पत्रिका ''राजभाषा रत्नसिंधु'' का अंक: 8 प्राप्त हुआ ।

''राजभाषा रत्नसिंधु'' में हिन्दी और मराठी भाषा का अद्वितीय संगम है । सभी विषयों के लेख स्तरीय एवं स्तुत्य है । पत्रिका के मुखपृष्ठ का चयन उत्तम, मनमोहक और अप्रतिम तो है ही साथ–साथ पत्रिका में छपे चित्र, भाव संप्रेषण में लेखों के समकक्ष भलिभाँति बैठते हैं । विशेष रूप से, पृष्ठ क्र.15 का ''भारत की कन्याएं'' यह लेख उल्लेखनीय एवं सराहनीय लगा । आशा है की ''राजभाषा रत्नसिंधु'' के आगामी अंक भी सदैव पाठकों के साहित्य तथा बैंक ज्ञान पिपासा को शांत करने में सदैव सहायक होंगे । एक बार फिर हिन्दी अर्ध वार्षिक–पत्रिका ''राजभाषा रत्नसिंधु'' की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए सस्नेह बधाई ।

सधन्यवाद,

महेश्वर घनकोट
हिन्दी अधिकारी

हिन्दुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लिमिटेड
कछाड पेपर मिल, पंचग्राम, असम
महोदय,

''रत्नसिंधु'' का 8 वा अंक मिला, आभार । आकर्षक आवरण से सुसज्जित ''रत्नसिंधु'' नि:संदेह दर्शनीय है । अंदर के पृष्ठों पर विभागीय लेखकों की रचनाएँ पठनीय हैं । डॉ. चित्रा गोस्वामी का लेख ''भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं में बिम्ब'' पसंद आया । ''राष्ट्रीय सुरक्षा'' एक दमदार आलेख है, जो पत्रिका के अनुकूल है । डॉ. रवि गिरहे ने ''प्रभावी बैंकिंग के लिये कर्मचारियों की भूमिका'' का निर्वाह भली–भाँति किया है । बा. सु. नाडगे का आलेख ''हरित भवन : भविष्य की जरूरत'' सामयिक व उपयोगी है । वासुदेव रा. गवस ने ''भारत के बाल श्रमिक समस्या'' पर समुचित प्रकाश डाला है ।

विशेष शुभ सहित,

पर्यवेक्षक (राजभाषा)
–मा सं. एवं का से

आयकर अपीलीय अधिकरण, पुणे न्यायपीठ,
महाराष्ट्र जीवन प्राधिकरण, 2 माला,
सेंट मेरी स्कूल के पास, स्टेवली रोड, कैंप, पुणे – 411 001.
महोदय,

हमें यह सूचित करने में हार्दिक प्रसन्नता हो रही है की, आपके नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा प्रकाशित गृहपत्रिका 'रत्नसिंधु' प्राप्त हुई है । हम आशा करते है की यह पत्रिका हमारे कार्यालय के सभी कर्मचारियों को पसंद आएगी, साथ ही में आपके अनुरोध के अनुसार हम अपने सुझाव जरूर भेजेंगे ।

सुषमा चावला
(अध्यक्षा, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पुणे
एवं वरिष्ठ सदस्य आयकर अपीलीय अधिकरण, पुणे न्यायपीठ, पुणे)

बैंक ऑफ इंडिया
कोलकाता अंचल
महोदय,

हिन्दी अर्ध वार्षिक 'रत्नसिंधु' का आठवां अंक प्राप्त हुआ है ।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत सृजनात्मक है तथा इसमें संबंधित छह माह के दौरान मनाए जानेवाले त्यौहारों की झलक दिखाई देती है । हिन्दी साहित्यकार भवानी प्रसाद मिश्र के संबंध में जानकारी संक्षिप्त और सारगर्भित है । रूठी बारिश में पर्यावरण की समस्या उजागर हुई है । ग्रीन बिल्डिंग के बारे में ज्ञानवर्धक जानकारी प्रस्तुत की गई है । इसमें हमारे देश में महिलाओं की स्थिति, समस्याएं, संबंधित कानून के बारे में सभी लेख व कविताएं प्रशंसनीय है । पत्रिका में दिए गए चित्र तथा हिन्दी पखवाडे से संबंधित पुरस्कारों की सूची से समिति की गतिविधियों की झलक मिलती है ।

साहित्य, देश के समक्ष समस्याओं और कार्यालय में कार्य करने से जुड़े लेखों के संतुलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं ।

शुभकामनाओं सहित,
बिनता सेनगुप्ता
आंचलिक प्रबंधक, कोलकाता अंचल

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आगरा
प्रधान आयकर आयुक्त–1 का कार्यालय
आयकर भवन, संजय प्लेस, आगरा–2
महोदय,

उपर्युक्त पत्रिका की प्रति प्राप्त हुई । धन्यवाद । पत्रिका में प्रकाशित आलेख, कविताएं एवं अन्य गतिविधियाँ पठनीय एवं सराहनीय हैं । डॉ. चित्रा गोस्वामी का भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं में बिम्ब चित्रण अति सुन्दर एवं समीचीन हैं । आलेख 'राष्ट्रीय सुरक्षा', 'प्रभावी बैंकिंग के लिए कर्मचारियों की भूमिका', तथा ईश्वर चन्द्र गुप्ता का 'एन.पी.ए. प्रबन्धन आज की जरूरत' सूचना–परक हैं । जी. राजकुमार की कविता बारिश, तथा तट रक्षक अवस्थान की अविता 'शहीद हुए जवानों के ऊपर' अच्छी लगी ।

पत्रिका का मुख पृष्ठ तथा पृष्ठ भाग अर्थपूर्ण है एवं अपने आप में सारगर्भित एवं बिम्ब प्रधान है ।

सफल पत्रिका प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं साधुवाद!

डॉ. आर. एस. तिवारी
सदस्य सचिव, नराकास आगरा

ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन लिमिटेड
अंकलेश्वर परिसम्पत्ति, अंकलेश्वर – 393 010.
जिला–भरूच (गुजरात)
महोदय,

हमें हिन्दी पत्रिका 'राजभाषा रत्नसिंधु' प्राप्त हुआ है । आपको इसके लिए बहुत–बहुत धन्यवाद ।

हिन्दी पत्रिकाएं राजभाषा के व्यापक प्रचार–प्रसार के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं । पत्रिकाएं हमें एक–दूसरे से जोडती हैं । हिन्दी पत्रिकाएं ही ऐसा माध्यम है जो राजभाषा हिन्दी के विकास को आगे बढा रही हैं क्योंकि पत्रिकाओं के माध्यम से लेखक अपने विचारों को पाठकों तक आसानी से पहुंचाने में सफल होता हैं ।

हिन्दी पत्रिका 'राजभाषा रत्नसिंधु' के कवर पेज की संरचना बहुत ही सुंदर की गई है । इसी के साथ ही, पत्रिका में संस्थान के हिन्दी में कार्यकलाप, प्रभावी बैंकिंग के लिए कर्मचारियों की भूमिका, भक्ति, कोंकण के उत्सव, पाठकों पर अपना प्रभाव छोडने में सफल हुई हैं ।

ओएनजीसी, अंकलेश्वर परिसम्पत्ति की ओर से मैं हिन्दी पत्रिका 'राजभाषा रत्नसिंधु के संपादक मंडल को बधाई देता हूँ ।

राम सिंह
प्रभारी–राजभाषा एवं
सचिव–नगर राजभाषा
कार्यान्वयन समिति

अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
आयकर भवन, 38, महात्मा गांधी मार्ग,
इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) – 211 001
महोदय,

कृपया उपरोक्त विषयक अपने पत्र दिनांक का संदर्भ लें । उक्त पत्र के साथ राजभाषा 'रत्नसिंधु' की प्रति प्राप्त हुई । एतदर्श धन्यवाद ।

प्राकृतिक संपदा के संरक्षण के मनोरम संदेशप्रद दृश्य से शोभायमान पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत ही चित्ताकर्षक हैं । पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न लेख, कविताएं एवं सूचनापरक रचनाएं पाठकों को स्वयमेव आकर्षित करती हैं । जहां 'राष्ट्रीय सुरक्षा', 'प्रभावी बैंकिंग के लिए कर्मचारियों की भूमिका', 'भारत की कन्याएं', 'ग्रीन बिल्डिंग (हरित भवन) भविष्य की जरूरत' तथा 'भारत में बाल श्रमिक समस्या' जैसे उत्कृष्ट लेख हैं वहीं 'तलाश', 'बारिश', 'शहीद हुए जवानों के ऊपर', 'विमर्श है नारी' तथा 'सीता और द्रौपदी' जैसी मार्मिक कविताएं भी हैं । पत्रिका में चित्रों के माध्यम से नराकास, रत्नागिरी के कार्यकलापों की झलक, स्पष्ट एवं क्रमबद्ध रूप में दिखाई पडती हैं साथ ही मराठी भाषा के आलेख, काव्य सम्मिलन से पत्रिका की गुणवत्ता और बढ गई हैं । पत्रिका में प्रकाशित अच्छी रचनाओं के संकलन के लिए संपादक मंडल को बहुत–बहुत बधाई ।

मेरी कामना है कि राजभाषा रत्नसिंधु के आगामी अंक नित नए कलेवर के साथ प्रकाशित होते रहें ।

प्रकाश चंद्र मिश्र
सहायक निदेशक (राजभाषा)
एवं सदस्य सचिव, नराकास
कार्यालय मुख्य आयकर आयुक्त, इलाहाबाद

स्वच्छ भारत-एक कदम स्वच्छता की ओर

– वा. रा. गवस
कनिष्ठ अभियंता (विद्युत)
कोंकण रेलवे, रत्नागिरी.

स्वच्छ भारत का सपना महात्मा गांधीजी ने देखा था और इसे साकार करने के लिए हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री श्री. नरेन्द्र मोदी जी ने इसकी शुरूआत 2 अक्तूबर, 2014, गांधी जयंती के दिन नई दिल्ली के राजघाट पर की । इस अभियान के आरंभ के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने खुद सड़क को साफ किया । ये अभी तक का सबसे बड़ा सफाई अभियान है, जिसमें 30 लाख सरकारी कर्मचारियों के साथ स्कूल-कॉलेजों के बच्चों ने भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया । इस अभियान का उद्देश भारत के सभी शहरों और गावों को स्वच्छ करना है । ये मिशन महात्मा गांधी के लिए 2016 में, उनकी 150 वीं वर्षगांठ को मनाते समय हमारी तरफ से श्रद्धांजली होगी । महात्मा गांधीजी ने अपने आसपास के लोगों से स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था ।

इस अभियान को सफल बनाने के लिए सरकार ने सभी लोगों से निवेदन किया है कि, वो अपने आसपास और दूसरी जगहों पर साल के सिर्फ 100 घंटे सफाई के लिए दे । स्वच्छ भारत अभियान एक राष्ट्रीय मुहिम है जो भारत सरकार द्वारा स्थापित किया गया है । भारत के शहरी विकास तथा पेयजल और स्वच्छ़ता मंत्रालय के तहत इस अभियान को ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में लागू किया गया है ।

इस अभियान में भारत के लगभग सभी लोगों ने काफी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया है और भारत को स्वच्छ़ बनाने की प्रतिज्ञा ली है । स्वच्छता के उपर इतना ज्यादा ध्यान अभी तक किसी ने नहीं दिया जा रहा था, लेकिन स्वच्छ़ भारत अभियान आने के बाद लोगों में स्वच्छ़ता के प्रति जागरूकता काफी बढ़ गयी है ।

हमारे देश की उन्नती के लिए भारत का स्वच्छ़ होना बहुत जरूरी है, स्वच्छ़ भारत में ही भारत के लोग स्वस्थ रह पायेंगे और जब लोग स्वस्थ रहेंगे तभी अपनी पूरी ऊर्जा से भारत की प्रगती के लिए काम कर पायेंगे । इस अभियान से लोगों को पता चला है कि, आसपास की जगह को साफ करना सरकार की ही नहीं बल्कि अपनी भी जिम्मेदारी है । जब लोग खुद सफाई के कार्यक्रमों में भाग लेते है, तो उन्हें यह एहसास होता है की गंदगी फैलाना कितना आसान है, लेकिन उसे साफ करना उतना ही मुश्किल! इससे लोगों की आदतें बदली है और अब किसी भी तरह की गंदगी फैलाने में हिचकिचाते है ।

एक कहावत में कहा गया है, 'स्वच्छता भगवान की ओर अगला कदम है' । हम इसी तरह स्वच्छता का ध्यान रखे तो कह सकते है कि, 2019 तक भारत को स्वच्छ और हरा-भरा बनाने के लिए स्वच्छ भारत अभियान एक सराहनीय कदम है । स्वच्छ़ता के प्रति जागरूकता और अनुसरण किया गया तो आने वाले वर्षो में स्वच्छ़ भारत अभियान से पूरा देश भगवान का निवास स्थल बन जायेगा ।

◆

विमुद्रीकरण एक अवसर या चुनौती

डॉ. रवि दिवाकर गिरहे
बैंक ऑफ इंडिया, नागपुर अंचल

हाल ही में भारत सरकार द्वारा अकस्मात 500 तथा 1000 रुपयों के नोटबंदी की घोषणा की गई तथा तुरंत इन नोटों को चलन बंद किया गया। विमुद्रीकरण की इस घटना के दूरगामी परिणाम हमारी अर्थव्यवस्था पर देखे जा सकते है. भारत जैसे देश में जहां पर अधिकांश नगदी व्यवहार किए जाते है, अकस्मात विमुद्रीकरण से हलचल सी मच गई है। विमुद्रीकरण का उद्देश्य विशेषकर कालेधन को समाप्त करना, भ्रष्टाचार समाप्त करना तथा आतंकवाद को रोकना रहा है। हालांकि विमुद्रीकरण के कुछ विपरित परिणाम भी देखने को मिल रहे है, जिसे योजनाबध्द तरीके से दूर किया जा सकते है। विमुद्रीकरण से हमारे उद्देश्यों को पूरा करने के अवसर जरुर प्राप्त हुए लेकिन इस राह में अनेक चुनौतियाँ भी है जिसका हमें सामना करना पडेगा.

विमुद्रीकरण से तात्पर्य :

विमुद्रीकरण से तात्पर्य यही है कि, बड़े नोटों को चलन से हटाना। वैसे भी हमारे संविधान के निर्माता तथा महान दार्शनिक बाबासाहेब आंबेडकर ने स्पष्ट किया था कि, अगर हमारे देश को भ्रष्टाचार, काले धन से दूर रखना है तो हर पांच सालों में विमुद्रीकरण किया जाना चाहिए. विमुद्रीकरण से काले धन का संचय करना कठिन होता है जिससे भ्रष्टाचार पर अंकुश लगता है।

दुनिया में कोई भी ऐसा देश नही है जो पूरी तरह कैशलेस हो। डेन्मार्क, स्वीडन और नार्वे ऐसे देश है जहां पर अधिक से अधिक से कैशलेस व्यवहार किए जाते है। 1661 में स्वीडन ऐसा देश था, जहां पर नोटों का चलन में लाया गया था. करीब 350 साल बाद आज यही देश अधिकांश कैशलेस व्यवहार करता है। भारत में करीब 97 प्रतिशत व्यवहार नकदी में होते है। मात्र 6 प्रतिशत चिल्लर विक्रेता डिजिटल भुगतान का स्वीकार करते है.

विमुद्रीकरण के अवसर :

सरकार ने 8 नवंबर 2016 को अचानक मध्य रात्रि के बाद 500 और 1000 के नोट चलन से समाप्त करने की घोषणा कर दी। सरकार का यह कदम अवैध नकदी को खत्म करने के लिए उठाया गया। विमुद्रीकरण ही इस अकस्मात घटना से सारे देश को धक्का लगा है। वैसे देखा जाए तो विमुद्रीकरण प्रणालीगत रुप से जीएसटी से भी अधिक लाभदायक सिध्द हो सकता था. खासतौर पर यह देखते हुए कि, जीएसटी के प्रस्तावित दरों वाले ढांचे ने उसकी मूल आत्मा को ही क्षति पहुंचाई है। लंबी अवधि के दौरान कई तरह की समस्याएँ सामने आएगी लेकिन विमुद्रीकरण में यह क्षमता है कि, वह मौजूदा सरकार द्वारा कार्यभार संभालने के बाद अब तक का सबसे अहम आर्थिक निर्णय बनकर उभरे।

विमुद्रीकरण के अनेक अवसर देखे जा सकते है जैसे, अर्थव्यवस्था में सुधार के अवसर, रोजगार के अधिक अवसर, जी.डी.पी. में वृद्धि के अवसर, प्रत्यक्ष कर योजना में सुधार, विनियोग तथा विदेशी मुद्रा में वृद्धि, काले धन का खात्मा, आंतकियों को फंडिंग रोकने में मदद, छोटे नोटों के चलन बढ़ने से भष्टाचार पर नियंत्रण, बैंकों में नकदी की वृद्धि, जमाखोरी से मुक्ति, वित्तीय बचतों को बढ़ावा मिलेगा, पारदर्शिता और नियमानुकूल आचरण में सुधार,देश में नकदी रहित अर्थव्यवस्था बनाने में सहयोग, ई-भुगतान में वृद्धि तथा मोबाइल लेनदेन को बढ़ावा, कर्ज सस्ता होगा तथा बैंकिंग व्यवस्था सुदृढ होगी, जाली नोटों से मुक्ति, नोट छापने के लिए आने वाले व्ययों में कटौति,चोरी, डकैती, नोटों का गुमना, नोट खराब होना जैसी समस्याओं पर उपाय, आर्थिक अनुशासन, महंगाई दर कम होगा आदि।

निश्चित ही विमुद्रीकरण से ऐसे अनेक अवसर तथा लाभ प्राप्त होते है जिससे समाज को राहत मिलेगी तथा अर्थव्यवस्था को मजबूती प्राप्त होगी।

विमुद्रीकरण के नकारात्मक प्रभाव तथा चुनौतियाँ :

विमुद्रीकरण के अवसरों के बारे में तो हमने सोचा लेकिन उसके दुसरे पहलू

पर भी हमें ध्यान देना होगा तभी हमारी यह योजना सफल हो सकेगी।

1. आंतकवादियों को होने वाली फंडिंग को रोक देना कोई विश्वसनीय दलील नहीं है क्योंकि, आंतकी और चरमपंथी तो नए नोटों की नकल भी छाप सकते हैं। इसके लिए सरकार को प्रभावी यंत्रणा बनानी पड़ेगी तथा निरंतर उसपर ध्यान रखना होगा।

2. चूंकि नकदी की उपलब्धता में अचानक भारी कमी आई है इसलिए रोजंदारी पर काम करनेवाले श्रमिकों और उन तमाम लोगों को जिनके पास पहचान के कागजात नहीं हैं, अपने दैनिक खर्च चलाने में खासी मुसीबत का सामना करना पड़ेगा। इसकी वजह यह है कि कागजात के अभाव में वे बैंकों का रुख भी नहीं कर सकते। ये निराशाजनक हालात तब तक बने रहेंगे जब तक बैंक और पोस्ट ऑफिस मांग पर नकदी उपलब्ध कराने की स्थिति में नहीं आ जाते होना यह चाहिए कि अगले करीब दो महीने तक केंद्र और राज्य सरकारों को खाद्यान्य और आवागमन की सुविधा मुफ्त उपलब्ध करानी चाहिए, जैसे प्राकृतिक आपदा के दिनों में किया जाता है।

3. नकदी की मौजूदा कमी मुद्रास्फीति पर असर डालेगी तथा इसकी वजह से आर्थिक गतिविधियाँ और नए रोजगार पैदा होने की गति में भी धीमापन आ सकता है।

4. अचल संपत्ति की और परिसंपत्तियों के मूल्य में गिरावट आने के अनुमान जताए जा रहे हैं। अगर ऐसा होता है तो ऋण की गुणवत्ता और खराब होगी क्योंकि, ऋण लेने वालों के लिए मौजूदा देनदारियों को निपटाना ही मुश्किल हो जाएगा।

5. जहाँ तक शहरी स्त्रोतों से उभर रहे जोखिम की बात है तो कहा जा सकता है कि ट्रंप की भविष्य की नीतियाँ अमेरिका में ब्याज दरों में इजाफा कर सकती हैं और इससे पूंजी देश के बाहर जा सकती है. अंतरराष्ट्रीय पूंजी बाजार से मिल रहे संकेत यही बता रहे हैं कि फेडरल रिज़र्व दिसंबर में दरों में वृद्धि कर सकता है। ऐसी स्थिति में पोर्टफोलियों पूंजी बाज़ारों से बाहर का रुख करेगी।

6. सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर में कमी आ सकती है।

7. वास्तविकता यह है कि कई भारतीयों के पास भारी मात्रा में बेनामी नकदी है और कर देने से बचने के लिए ऐसी रकम को सोने या आभूषण, अचल संपत्ति के रुप में या विदेशों में कर चोरी वाले ठिकानों पर रखा जाता है। संभावना यही है कि, देश में जमा करके रखी गई भारी भरकम रकम सामने नहीं आएगी। क्योंकि, अगर यह रकम बैंकों में जमा हो जाती है तो अतीत में अपराध भी सिध्द होंगे। ऐसा अनुमान है कि, करीब तीन लाख करोड़ रुपये की राशि बैंकों में जमा नहीं होगी. यह प्रचलन में रहे 500 और 1000 रुपये की मुद्रा का 30 प्रतिशत है। इसके अलावा एक लाख करोड़ रुपये की राशि कर और जुर्माने के रुप में सरकार के पास आएगी।

8. नकारात्मक बात यह है कि सरकार और आरबीआई को वैध मुद्रा के मुद्रणपर धन खर्च करना होता है। फिलहाल आम जनता के पास 10 लाख करोड़ रुपये की राशि 500 रु 1000 के नोट में है। ऐसे में यह दावा किया जा सकता है कि अगर एक साल के लिए रुपये पर सरकारी प्रतिभूति की ब्याज दर 6.4 प्रतिशत हो तो सालाना 64,000 करोड़ रुपये तो मुद्रण खर्च होगा. तुलनात्मक रुप से देखा जाए तो सरकार के पास जो चार लाख करोड़ रुपये की राशि आएगी व वर्ष 2016-17 के जीडीपी के 2.7 प्रतिशत के बराबर होगी. इस वर्ष के लिए राजकोषीय घाटा 3.9 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया गया है। इसके अतिरिक्त कर अंतराल की बात करे तो प्राप्ति और कम कर संग्रह के बीच का अंतर घट सकता है।

9. विमुद्रीकरण का निर्णय जल्दबाजी में हुआ है। उपभोक्ता अधिकारों का हनन हुआ है. एटीएम का फेल हो जाना, बैंकों में नोटों की कमी, 100 रुपये के मूल्य के बाद सीधे 2000 रुपये मूल्य की नोट चलन में आने से रोजमर्रा की अर्थव्यवस्था चरमरा गई है.

10.तथ्य यह भी है कि विमुद्रीकरण से भविष्य में अवैध धन संग्रह पर अंकुश नही लगाया जा सकता है। इस पर असर डालने वाले अन्य कारक हो सकते है उन वेंडरों पर भारी भरकम जुर्माना जो 25000 रुपये से अधिक वाले अपने ग्राहक का पैन नंबर नहीं देते। पैन या आधार संख्या न होने पर अन्य पहचान चिन्ह आवश्यक किया जाना चाहिए. नकद लेनदेन के लिए 25000 रुपये की अधिकतम सीमा का इस्तेमाल वैध लेनदेन करने वालों को तंग करने के लिए नहीं होना चाहिए।

11.विमुद्रीकरण से ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर बुरा असर पड़ा है।

12.हाल ही में भारतीय रिज़र्व

बैंक द्वारा प्रस्तुत डेटा के अनुसार विमुद्रीकरण के पश्चात बैंकों के ऋण वृद्धि दर 5.8 प्रतिशत पर आया है। 1962 के बाद यह सबसे कम वृध्दि दर है. दो माह पूर्व यह दर 8 प्रतिशत था. देश की आर्थिक हलचल निर्धारित करने के लिए यह वृध्दि दर महत्वपूर्ण होता है. विमुद्रीकरण से ऋण की मांग में कमी आई है. जिससे आर्थिक मंदी का खतरा मंडरा सकता है.

13. विमुद्रीकरण के माध्यम से आज भी जितनी अपेक्षा थी उतना काला धन बाहर नही आया है।

14.ग्रामीण क्षेत्र में विमुद्रीकरण का असर; आरबीआई के मुताबिक बैंकों की केवल 38 फीसदी शाखाएँ ही ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत। हर पांच में से चार गांवों और हर तीन में से एक कस्बे में कोई बैंक नहीं है। पूरे देश के 5,93,000 गाँवों के लिए केवल 1,20,000 बैंकिंग प्रतिनिधि हैं यानी ग्रामीण व कस्बाई इलाकों में रहने वाली 60 करोड़ से भी अधिक आबादी की बैंकों तक पहुँच नहीं है। इसी तरह ३० करोड़ से भी अधिक वयस्क आबादी के पास कोई बैंक खाता नहीं है। देश के करीब 94 फीसदी वयस्क आबादी के पास आधार कार्ड होने का अनुमान है। लेकिन 6 करोड़ वयस्क लोग अब भी ऐसे है जिनके पास बैंक खाते खुलवाने लायक कोई दस्तावेज नही है। हालत यह है कि ग्रामीण इलाकों में सक्रिय बैंकों के लिए कोर बैंकिंग जैसा काम भी कर पाना मुश्किल हो जाता है क्योंकि बिजली की आपूर्ति काफी अनियमित है। एटीएम के व्यावहारिक संचालन में भी इसी तरह की व्यावहरिक परेशानियाँ आती है। इंटरनेट कनेक्शन की हालात खराब होने से वहां ऑनलाइन लेनदेन काफी मुश्किल हो जाता है। ऐसे में डिजिटल बैंकिंग वहाँ पर कैसी पहुंच बनाएगी इसपर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए।

15. साइबर क्राइम को रोकना : डिजिटल भुगतान या कैशलेस अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने से पहले साइबर क्राइम के प्रति जागरुकता आवश्यक है. सूचना प्रौद्योगिकी कानून 2000 में सुधार की आवश्यकता है. इसमें कैशलेस व्यवहार तथा इ-वॉलेट की शिकायतों को शामिल करना होगा। जानकारी के अनुसार 2011 से 2015 के बीच में करीब 32000 साइबर क्राइम नोट किए गए। कम्प्युटर हॅक करना, डेटा हॅक करना आदि गुनाह बड़े पैमाने पर हो रहे है। डेटा संरक्षण और निजता कानूनों का अभाव सरकार की डिजिटलीकरण की राह में बाधक है। देश में नकदी रहित अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन देने वाला भौतिक ढ़ाचा या कानूनी ढ़ाचा उपलब्ध नही है। भौतिक ढ़ाचे में इन कमियों के साथ ही भारत के पास मजबूत डेटा सुरक्षा कानून भी नही है। पिछले कुछ महिनों में ही ऑनलाइन डेटा चोरी करने के कई मामले सामने आ चुके हैं। डेटा प्राइवेसी कानून भी नहीं होने से यह खतरा बना हुआ है कि मोबाइल लेनेदेन से हासिल डेटा को कंपनियाँ बाद में दूसरों को बेच सकती है।

विमुद्रीकरण से उभरी समस्याएँ तथा चुनौतियों को दूर किया जा सकता है। किसी भी नए कदम को उठाते समय इस प्रकार की समस्याएँ निर्माण होती रहती है। लेकिन हम उस पर गंभीरता से चर्चा कर सकते है, अर्थशास्त्रियों तथा विद्वानों को इसमें जोड़कर योग्य दिशा निर्धारित कर सकते है। इसे केवल राजनैतिक कदम न समझकर उसे सामाजिक स्तर पर दूर करने का प्रयास करना होगा तभी हमें इसके दूरगामी परिणाम देखने को मिलेंगे।

◆

आरोग्य बीमा (हेल्थ इन्शुरेंस)

– किरण खटावकर
सहायक प्रबंधक,
दि न्यू इंडिया एश्योरेन्स कंपनी लिमिटेड, रत्नागिरी

वर्तमान स्थिति को देखते हुये किसी भी और कैसी भी बीमारी पर इलाज के लिए खर्चा करना सामान्य लोगों के लिए कठीण ही नहीं तो कई बार इस खर्च के कारण पूरा घरबार बिखर जाता है और वह कर्ज के घेरे मे जखड़ जाता है । इसीलिए हर सामान्य लोगों के पास आरोग्य बीमा (हेल्थ एश्योरेन्स) पॉलिसी होना जरूरी ही नहीं आवश्यक हो गया है ।

अपने भविष्य के लिए लोग लाइफ इन्शुरेंस की पॉलिसी लेते है, पर विकल्प स्थिति में आनेवाली बीमारी के लिए कोई प्रबंध नहीं सोचते है । 15 साल पहले आरोग्य बीमा पॉलिसी लेना सामान्य लोगों के लिए कठीण बात थी, पर वर्तमान स्थिति में जनरल इन्शुरेंस की सेवा देनेवाली बहुत सारी कंपनिया बाजार में मौजूद है और उनके पास रुपये 50,000/- से लेकर रुपये 10 लाख तक की बीमा पॉलिसी उपलब्ध है । रोटी, कपड़ा और मकान के साथ ही, आपने परिवार की रक्षा के लिए ''आरोग्य बीमा'' होना अब आवश्यक हो गया हैं । किसी भी बीमारी के इलाज के लिए अस्पताल का बढ़ता हुवा खर्चा देखकर अब यह बात तय है कि, हर सामान्य लोगों के पास आरोग्य बीमा पॉलिसी होना जरूरी है । अस्पताल के खर्चा के साथ बाहर के जो भी दवा खरीदना जरूरी है उसका भी बजेट जादा है और इसे झेलने के लिए यह बात सामान्य लोगों की क्षमता से काफी बाहर है और यहाँ आरोग्य बीमा पॉलिसी की आवश्यकता महसूस होती है ।

भारतीय बीमा बाजार में जनरल इन्शुरेंस कंपनियोंद्वारा जितनी भी आरोग्य बीमा पॉलिसी उपलब्ध है, उनमें हर इलाज के लिए (1) अस्पताल के रूम का खर्चा, (2) डॉक्टर की फीस, (3) दवाईयाँ का खर्चा, (4) ऑपरेशन के चार्जेस, (5) ऑपरेशन के वक्त भूल देने के लिये चार्जेस आदि का स्पष्ट उल्लेख रहता है और इसे ध्यान में रखते हुये पॉलिसी का चयन करना जरूरी हैं । किसी भी आरोग्य बीमा पॉलिसी की बीमाराशि (प्रीमियम) मुख्यत:-

1) परिवार के कितने लोगों को इसमें शामिल करना है,

2) हर एक व्यक्ति की उमर क्या है,

3) कितने रकम की (Sum Insured) बीमा पॉलिसी चाहिए,

इस पर निर्भर रहती है । एक और बात ध्यान रखना जरूरी है कि इस बीमा पॉलिसी की बीमाराशि पूरे साल के लिये होती है और इसे पॉलिसी लेते वक्त ही भरना जरूरी है ।

हर आरोग्य बीमा पॉलिसी में (1) कौन-कौनसी बीमारी के लिये उपचार उपलब्ध है, (2) कौन-कौनसी बिमारी इस में उपलब्ध नहीं है, (3) कौन कौनसी बिमारी के लिये कितना समय (वेटिंग पीरियड) रुकना जरूरी है, (4) कितना समय (वेटिंग पीरियड) रुकने बाद, उस बीमारी के लिये कितना खर्चा मिलता है यह सब जानकारी उपलब्ध रहती है और इसे ध्यान में रखते हुये पॉलिसी का चयन करना जरूरी है । इस के साथ अपने परिवार में जीतने भी सदस्य है उन सभी को इस पॉलिसी में शामिल करना आवश्यक है। ताकि भविष्य में कोई समस्या न आए । यह सब आरोग्य बीमा पॉलिसी केवल एक साल की रहती है और उसे हर साल पॉलिसी समाप्ती के पूर्व नवीकरण (renewal) करना जरूरी है, ताकि आप के परिवार का भविष्य थोड़ा तो सुरक्षित रहें ।

आरोग्य बीमा पॉलिसी के बारे में एक और जानकारी यहाँ देना मैं जरूरी समझता हूँ की दावा के पश्चात जब किसी भी बीमा पॉलिसी की बीमाराशि (sum insured) पॉलिसी कालावधि के बीच में ही खत्म हो गयी तो, उतनी ही बीमाराशि बचे हुये कालावधि के लिये रि-इंस्टेट कर सकते हैं, पर उसे बचे हुये कालावधि के अनुसार पुनश्च प्रीमियम भरना जरूरी है । यह बात बीमाधारक को ध्यान में रखना जरूरी है । आरोग्य बीमा पॉलिसी का जब भी नवीकरण (renewal) कराते समय बीमाधारक इसकी बीमाराशि (sum insured) बढ़ाने के बारे में सोच सकता है और इस के हिसाब से जो भी बढ़नेवाली प्रीमियम के बारे में इसकी भी व्यवस्था कर सकता हैं ।

आरोग्य बीमा पॉलिसी लेकर आप अपने परिवार की सुरक्षा कर सकते है, तथा आप भी चिंतारहित जिंदगी भी जी सकते हैं । आरोग्य बीमा पॉलिसी होने से आप को अहसास होता है कि आपतकालिन स्थिति में अस्पताल व्यय के लिए तैयार रहते हो और आप का आर्थिक बोज भी कुछ हदतक कम होता हैं । फिर क्या सोच रहे हो, चलो अपने परिवार की सभी जानकारी लेकर किसी भी जनरल इन्शुरेंस कंपनी को संपर्क करके आरोग्य बीमा पॉलिसी ले लिजीए और अपना और अपने परिवार का भविष्य सुरक्षित रखिए।

◆

युवा पीढ़ी को सही दिशा दें

श्री. नामदेव आर भोईनकर
तकनीकी सहायक
एमपीईडीए, सटेलाइट सेंटर, रत्नागिरी

यह बात आम कहने-सुनने में आती है की बचपन खाने-खेलने के लिए, जवानी मौज-मस्ती के लिए और बुढ़ापा धर्म-कर्म के लिए होता है, कहा भी है कि,

एह जग मीठा ते अगे कीस डिठा ।
बस खाओ, पीओ और मौज करो ।

आगे किसने क्या देखा है अथवा सब ज्ञान-ध्यान बुढ़ापे में, वाली विचारधारा को अपनाते नजर आते है वो यह भूल जाते है कि इस बात की कोई गारंटी नही है, बचपन के बाद जवानी आएगी की नहीं और जवानी के बाद बुढ़ापा आएगा की नहीं क्योंकि जीवन तो क्षणभंगुर है, न जाने कब श्वासों की लड़ी टूट जाए। इसके बीतने का कुछ पता नहीं चलता है।

सुबह को बचपन हँसते देखा, दोपहर को मस्त जवानी।
शाम बुढ़ापा ढलते देखा, रात को खत्म कहानी।

जीवन के हर पहलू की कीमत है। बचपन अगर संभल जाए तो जवानी भी संभल जाएगी, जवानी अगर संभल गई तो बूढापा भी संभल जाएगा। आदि,मध्य और अंत तीनों का सही होना जरूरी है। अक्सर कहा जाता है कि बचपन का खाया जवानी में काम आता है और जवानी का खाया बूढ़ापे में। यहां भी यह बात लागू होती है कि बचपन अगर सुसंगत में बीत गया तो जवानी बहकने-भटकने से बच जाएगी, जवानी में अगर सुमति बनी रही तो बुढ़ापा निश्चय ही सही दिशा वाला होगा। एक कड़ी दूसरी कड़ी के साथ जुड़ी हुई है। विवेक शौक जी का वो शेर यहा एक दम सटीक साबित होता है की

मजा जब है विवेक अपनी जवानी में सुधर जाए, वरना बूढ़ापे में सुधर जाना मुश्किल नहीं होता।

बूढ़ापा आते-आते तक तो इंसान अपने अच्छे-बुरे अनुभवों के चलते काफी हद तक यूँ ही सुधर जाता है, तभी तो बूजुर्गो से अक्सर यह कहते हुए सुना जाता है की हमने कोई धूप में बाल सफेद थोड़े ही किए है।

प्रश्न यह है कि बचपन में अगर चूक गए तो जवानी को कैसे बचाए, इसे भटकन की दिशा में जाने से कैसे रोकें। इसमें रूहनीयत कैसे लाएँ, इसे नूरानी कैसे बनाए। इसमे रूपान्तरण कैसे करें। ऐसा भी नहीं है की इसकी शक्ति को दबाना है, इसके जोश को मिटाना है, या इसकी ऊर्जा को नष्ट करना है ऐसा नहीं करना है, बस इसका रूपान्तरण करना है। इसे न मिटाना है, न दबाना है, न नष्ट करना है; बल्कि इसकी दिशा को बदलना है जैसे कि दरिया का पानी जब आप मुहारा हो जाता है, दिशा हिन जो जाता है तब यह सब तरफ से तबाही करता आ रहा होता है। यदि उसको नियंत्रित करके उस पर बांध बना दिया जाए तो वो हमारे अनेकों काम आता है, उससे बिजली का उत्पादन होता है, उससे नहरें निकली जाती है और भी तरह-तरह के उपयोगी साधन जुटाये जाते है, ठीक इसी प्रकार युवा शक्ति जो दिशाहीन नजर आ रही होती है, बहकी-भटकी हुई प्रतीत हो रही होती है उसको दबाने, मिटाने व उस पर अंकुश लगाने की बजाय उसे रूपांतरित कर दिया जाए, उसे सही दिशा दे दी जाएँ, उसे परमार्थ में लगा दिया जाए तो उसका यह सदुपयोग होगा। इसका परिणाम यह होता है की जो हाथ- पाव किसी को गिरने के लिए उठते थे, अब वो गिरते को उठाने के लिए उठते है, जो बोल किसी को चोट पहुंचाते थे, किसी का दिल दु:खाते थे, अब वो मरहम लगाने का काम करते है। जो सोच सदा बुरा सोचती थी, अब वो भला सोचती है। यह सारा बदलाव, यह रूपान्तरण किसी क्रांति से कम नहीं। पर यह क्रांति घटित तब होती है जब इसका पाठ-प्रदर्शक परिपक्व हो, कोई राहजन, राहगीर न होकर कामिल मुरशिद, रहबर ई रहनुमा हो जिसके सान्निध्य में आने से सब कुछ संवर जाए। हाव-भाव, चाल- ढाल, वृत्ति-श्रृति, बोली-भाषा, दृष्टि आदि सब बादल जाए। जिस-जिस ने भी ऐसे कर्मयोगी महात्मा का दमन थमा है, उसकी शरण ली है, उसके दिल की गहराइयों से यही बोल निकलते है, की,

मैंने देखा है जीवन की कहानी बदल जाती है, बूढ़ापे बदल जाते है, जवानी बदल जाती है।
ये निशाना जिस बेनिशाने को दे दे मुर्शिद, आदत बंदगी की कुल पुरानी बदल जाती है।

◆

वर्षा जल संचयन–समय की मांग

– बा. सु. नांडगे
वरिष्ठ क्षेत्रीय अभियंता,
कोंकण रेलवे, रत्नागिरी

महाराष्ट्र के भीषण सूखा प्रभावित क्षेत्र में जलदूत ट्रेन द्वारा लाखों लीटर पानी पहुँचाया गया । यह खबर पिछले साल अप्रैल महीने की है ।

हमारे कोंकण एरिया में सबसे ज्यादा बारिश होती है । लगभग 4000 मिमी. बारिश गिरती है । अगर मार्च महीने से पुरी नदीयाँ, नाले सुखे पड़े रहते है, पानी नही मिलता है । गांवो में इतनी बारिश होने के बावजूद मार्च–अप्रैल–मई महीने में टँकर से पानी सप्लाई किया जाता है । भूजल स्तर 0.20 मीटर प्रति वर्ष नीचे जा रहा है ।

पृथ्वी को अक्सर जलग्रह कहा जाता है । वर्षा के माध्यम से जल घटता भी है और फिर बढ़ता भी रहता है । इसलिए पानी के लिए चिंता करने की फिर क्या जरूरत है । वास्तव में विश्व के जलभांडार का केवल एक प्रतिशत हमारे उपयोग्य है ।

हमारे देश की बढ़ती जनसंख्या और शहरी विकास के वजह से जल संसाधनो के उपर भारी दबाव है । भूजल जलस्त्रोत लगातार दूषित होते जा रहा है । भूजल पर बढ़ती निर्भरता के कारण जलस्तर गिरा है और उसकी पुन:पूर्ती भी इस कारण बाधित हुई है । सालभर में वर्षा चार–पाँच माह होती है, उसका वितरण इतना असमान है की इतनी भारी औसत का कोई महत्त्व नहीं है ।

पेयजल, सिंचाई, बढ़ती जनसंख्या के कारण जल की आवश्यकता बढ़ती ही जा रही है । हम लोग पूर्ण अभाव की दिशा में बढ़ रहे है । भूजल प्रबंधन संकटपूर्ण है । जलस्त्रोत, विशेषकर नदियाँ शहरी गंदगी और औद्योगिक कचरे से प्रदूषित हुई है । आज विश्व का ध्यान सुरक्षित और पर्याप्त पेयजल उपलब्धता पर केंद्रीत हो रहा है । कहाँ जाता है की भविष्य के युद्ध जल से लेकर होंगे ।

स्वच्छ जल की कमी ने विकास में बाधाएं खड़ी की है । स्थानीय स्तर पर जल की उपलब्धता स्थानिक विकास और आर्थिक नीति को प्रभावित करती है । पेयजल की कमी एक संकट बनती जा रही है । जलस्तर का लगातार नीचे जाना भी है । बारीश से मिला हुआ पानी बहकर सागर में मिल जाता है, यह पानी का संचयन और पुनर्भरण करना अति आवश्यक है, उससे भूजल साधनों का संवर्धन हो जाएगा ।

अपने भारत देश का भूजल भंडारण 214 बिलीयन घन. मी. (बी.सी.एम.) है 160 बीसीएम की पुन:प्राप्ति हो सकती है । इस समस्या का एक ही समाधान है वो जल संचयन है ।

सतत जल की उपलब्धतता करने के लिए वर्षा जल संचयन भूजल के रिचार्ज एवं टंकी में भंडारण भारत में पिछले 4000 वर्ष पूर्व में वर्षा जल संचयन का प्रयोग किया गया है । रेल्वे के पास पर्याप्त जमीन उपलब्ध है, जिसमें गिरनेवाले पानी का संचयन कर पानी की उपलब्धतता को बढ़ाया जा सकता है । उससे रेलगाडियों, रेल–स्टेशन एवं रेल्वे आवास को जल व्यवस्था की जा सकती है । यदि हम वर्षा जल संचयन करते है तो जल के अभाव को हम काफी हद तक कम कर सकते है । वर्षा जल का मुख्य हिस्सा जमीन की सतह से बहकर नदी एवं नदी से समुद्र में बह जाता है । केवल 8 प्रतिशत वर्षा जमीन के जलवाही स्तर को रिचार्ज करती है । अगर हम उचित ढंग से वर्षा जल संचयन से 50 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है ।

शहरी क्षेत्रो में वर्षा के जल को संचित करने के लिए बहुत–सी संचयनाओं का प्रयोग हो सकता है । ग्रामीण क्षेत्र में वर्षा जल संचयन गली प्लग, परिरेखा बांध (कंटूर बंड), गेबियन संरचना, परिस्त्रवण टँक (परकोलेशन टैंक), चैक बांध/सिमेन्ट प्लग नाला बंड, पुनर्भरण शाफ्ट, कूप उग वैल पुनर्भरण, भूमिजल बांध, छत से प्राप्त वर्षाजल से उत्पन्न अप्रवाह संचित करने के लिए भी प्रयास किये जा सकते है । शहरी क्षेत्रों में वर्षा जल के संचयन को प्रोत्साहन देने के लिए भवन निर्माण संबंधी कानूनों में बदलाव करना ताकि इसे अनिवार्य रूप से लागू किया जा सके ।

वर्षा जल संचयन अर्थात् प्राकृतिक जलाशय या मानव निर्मित टैंको में बारिश के पानी को एकत्रित करना है । ये भविष्य में विभिन्न उद्देशों के लिए वर्षा जल को इकठ्ठा और संग्रहित करने की तकनीक है । यह सबसे सस्ता तरीका है ।

◆

मॉरिशस में हिन्दी का सम्मान

प्रा. डॉ. चित्रा गोस्वामी
रत्नागिरी

सेमिनार के लिए परदेस जाना दो साल से एक सपना रहा है । सवाल यह था की कैसे और कहाँ? अप्रैल 2016 में जैसे ही पता चला मॉरिशस में 'भूमंडलीकरण' पर सेमिनार होने जा रहा है तो मैंने संपर्क किया । अपना शोधप्रबंध तथा रजिस्ट्रेशन फीस के पैसे जमा करवाये । मन में थोड़ा ड़र था कर पाऊँगी या नहीं । लेकिन जाना तय हुआ वह भी परिवार के साथ तो सुकून मिला । मेरा शोधप्रबंध चुना गया था और आंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करना था । पाँच नवंबर से 11 नवंबर 2016 तक हम मॉरिशस में रहनेवाले थे ।

4 तारीख को रात 12 बजे मुंबई आंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुँचे, रात तीन बजे सामान ड़लवाने कतार में लगे रहे, 4 बजे प्रवासी अर्जी (Immigration Form) भरी और 5 बजे अंदर पहुँचे । अब 6.45 की राह देखने लगे । समय पर अंदर लिया गया । बोर्डींग पास, सीट नंबर चेक हुआ और हवाई जहाज में विराजमान हो गये । सामान्यत: 350 लोग कुल विमान में थे । सीट के सामने छोटा-सा विडियो लगा हुआ था जिस पर मॉरिशस का और भारतीय समय दिखाया जा रहा था । मॉरिशस समय के तौर पर भारत से दो घंटे पीछे है । विविधता से हवाई जहाज भरा हुआ था । भूख लगी थी और सामने आया फलों का डिब्बा, ब्रेड, जाम, बटर और ब्लॅक टी, फ्रुट ज्युस । जैसे भी हो खाने का आनंद उठाते रहे । नीचे सागर का विहंगम दृश्य भी देखते रहे ।

रॉड्रीग्ज :-

भारतीय समय के अनुसार दोपहर 1.5 पर मॉरिशस रामदयाल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरे और दो घंटे में रॉड्रीग्ज पर जाने का कार्यक्रम था । वहाँ पर भी आरोग्य तथा प्रवासी अर्जी भरनी पड़ी और फिर छोटे हवाई जहाज से डेड घंटो का सफर फिर एक बार सागर पार कर कीया । प्राकृतिक सौंदर्य, पेड़, सागर किनारे सब बिल्कुल रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग तथा गोवा की याद दिलानेवाले थे । 'रॉड्रीग्ज हिंदी स्पिकींग युनियन' के रमणिक चित्तुजी गाड़ी लेकर हमें लेने आये थे । गपशप लड़ाते चर्चासत्र, रहन-सहन, वेशभूषा, खान-पान आदि पर विमर्श करते हम बहुत ही सुंदर होटल 'ला' पर पहुँचे । शरीर की थकान मिटानेवाली प्रकृति । लकड़ी का उपयोग अधिकतर दिखाई दे रहा था लेकीन विविधता से । रहने की सुविधा भी लाजबाब । व्यवसाय में अधिक तर महिलाओं का समावेश दिखाई दिया ।

रात का खाना ठीक 8.00 बजे सामने आया । हर एक के सामने सब्जियों से, सॅलड से सजी थालियाँ और चम्मच । मिर्च की चटनियों के प्रकार । आधी सब्जियाँ खा ली तो बाऊल में चावल (राईस) आया । मतलब चावल और कभी-कभार मिलनेवाली रोटी कम खाना, ज्युस पिना, फल, ब्रेड बटर, जाम और काली चाय से तंदुरूस्त वहाँ की जनता दिखाई दी । दो मौसम सर्दी और गर्मी बारिश रोज होती है ।

6 नवंबर, 2016 के दिन रॉड्रीग्ज सरकार हिंदी स्पिकींग युनियन और हिंदी साहित्य तथा संस्कृतिक संस्था, मुंबई के संयुक्त विद्यमान से प्रथम अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन हुआ था । विषय था - हिंदी के प्रचार-प्रसार में रामायण का सांस्कृतिक अवदान' । इस समय हिंदी स्पिकींग युनियन के प्रमुख मिशमित फिलतसिंग के साथ बहुत मान्यवर उपस्थित थे । "International Hindi Lovers" संस्था की स्थापना की

घोषणा की गई । शासन की ओर से भारतियों का शाल और स्मृतिचिन्ह देकर सम्मान किया गया । हमारे साथ कर्नाटक, लखनौ, बिहार, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मुंबई से आये हमारे साथी थे । संध्या समय 7.20 बजे 'रॉड्रीग्ज दूरदर्शन केंद्र सारा समाचार विस्तृत दिखाया गया और हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार का काम करने के लिए बधाई दी गई ।

दोपहर 1.00 बजे के बाद घुमने निकले । 52 मोडवाले रास्ते से सागर सौंदर्य निखार रहे थे । 'कॉटन बे' नामक एक बड़े से होटल में प्रवेश किया जो सागर किनारे पर था । हर किनारा अलग सौंदर्य, रंग लिए खड़ा था । आगे हँडिक्राफ्ट की चीजें देखने हेतु उतरे । हमारे ड्राइवर का नाम क्रिस्तोफर था ।

शाम 6.00 बजे ब्रह्माकुमारी आश्रम के प्रमुख बेनीजी के यहाँ चर्चा की मैफिल जमी । रॉड्रीग्ज का इतिहास बताया गया, कविता की महफिल हुई, आश्रम की जानकारी दी गई ।

सबसे सराहनीय बात थी वहाँ के लोगों की प्रामाणिकता । रॉड्रीग्ज के हवाई अड्डे पर उतरने के बाद मैंने कुछ तस्वीरे निकाली और मोबाईल वही रह गया । सामान लेकर बाहर आने के बाद याद आया । वहाँ की सिक्युरिटी से बताने पर बेटे को अंदर ले गया । जहाँ पर रखा था, मोबाईल को किसी ने छुआ तक नहीं था । प्रथम प्रवेश में साथ ही एक नया अनुभव प्राप्त हुआ ।

7 नवंबर को हम वापस मॉरिशस आ गये । Gold Crest नामक होटल में रूके थे । अस्थिर मौसम के साथ सारी चीजों का आनंद उठा रहे थे । बढ़िया नाष्टा था ।

8 नवंबर को एमजीआई (महात्मा गांधी इन्स्टिट्यूट, मोका, मॉरिशस) में अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन कीया गया था । विषय था - ''हिंदी के प्रचार-प्रसार में भारत तथा मॉरिशस संस्कृति का योगदान ।'' कार्यक्रम में इन्स्टिट्यूट की डायरेक्टर डॉ. विद्युत्तमा कुंजल, पूर्वाध्यक्ष सृजनात्मक लेखन विभाग प्रमुख डॉ. सुंदर हेमराज, आयसीसीआर के चेयरमेन डॉ. उमेशकुमार सिंग, प्रकाशन विभाग प्रमुख डॉ. राजरानी गोविंद, शिकवाबाद विश्व विद्यालय के वीसी डॉ. हरिमोहन, एमजीआय हिंदी विभाग प्रवक्ता डॉ. कृष्णकुमार झा, हिंदी विभाग प्रवक्ता डॉ. अलका धनपत, हिंदी प्रचार-प्रसार सेवा केंद्र प्रमुख डॉ. राज हिरामण, हिंदी विभाग प्रमुख डॉ. संयुक्ता रामधारी,महानिदेशिका डॉ. सूर्या दयालजी, हिंदी साहित्य-संस्कृति विभाग प्रधान डॉ. गोविंद मुरारका, डॉ. पि. के. सिंग, डॉ. विनयकुमार भारद्वाज आदि उपस्थित थे । हिंदी विभाग के 60-80 छात्र उपस्थित थे । मेरी किताबें उनके ग्रंथालय के लिए भेंट दी गई । यहाँ पर हिंदी को लेकर बड़ी जोर-शोर से चर्चा हुई ।

वहीं पर स्थित 'मोका म्युझियम' देखने को मिला । आज भी भारत की धरोहर को जतन कर रखा है । भारत से जिन्हें मजदूर बनाकर लाया गया उनकी जन्म से मृत्यू तक की पूरी कुंडली वहाँ मिलती है । ईख की खेती के औजार, कपडे, बर्तन सारी चीजें जतन की गई है । भारतीय संस्कृति का प्रतीक मिलता है । भारत का नक्शा जिस पर चिन्ह लगाकर कौन-कौन से प्रांत से लोग ले गये, इसकी जानकारी है ।

एमजीआई में हिंदी पुस्तकों का दालन देखा । सृजनात्मक साहित्य निर्मिति तथा प्रकाशन का काम भी हो रहा था । हिंदी के 65 छात्र पीएचडी कर रहे थे । चित्रकार, शिल्पकला के नमुने दिखाई दिये । हिंदी के लिए स्मार्ट क्लासरूम बनाये गये हैं ।

हिंदी प्रचारिणी सभा, लौंग, माऊंटेन, मॉरिशस में कार्यक्रम हुआ । प्रसार के लिए क्या करना चाहिए, इस पर चर्चा हुई । सभा के प्रमुख तथा अध्यक्ष डॉ. यंतुदेव बुधुजी थे । प्रचार सभा के मंत्रीजी धनराज शंभुजी ने बखुबी से कार्यक्रम निभाया । मैंने अपनी हिंदी पर लिखित कविताएँ प्रस्तुत की । बिहार, कटिहाल से आये डॉ. सूर्यनारायण यादवजी ने देवनागरी लिपि का महत्त्व बताया । आज कल तो नासा ने भी रोमन लिपि को नकारकर संस्कृत में रिपोर्ट बनाने का निर्णय लिया है । हिंदी के उत्थान के लिए नये व्याकरण की स्थापना करनी चाहिये । हिंदी आत्मा की भावना से जुड़ी होने की बात बताई । प्रो. डॉ. वैजनाथ सिंहजी ने मॉरिशस में आये भारतीयों, उनकी पीड़ा, कष्ट का उल्लेख करते हुए । मॉरिशस 1968 में स्वतंत्र होकर भी भारत से दुगनी प्रगती कर रहा है ऐसा वर्णन किया । मॉरिशस के पुराने कवि परमेश्वर बिहारीजी ने लंबी कविता सुनायी और भावुकता के साथ हिंदी का कार्य आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी । डॉ. सविता सिंग, डॉ. राजेंद्र पवार ने अपने हिंदी भाषा को लेकर विचार व्यक्त किये । बढ़िया खाने के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ ।

क्वार्टर बोन्स के गोल्ड क्रेस्ट

सभागृह में शाम के समय महफिल जमी । हिंदी गीतों से प्रारंभ हुआ, हिंदी प्रचार-प्रसार पर चर्चा हुई तथा सबका शाल, सम्मान चिन्ह, प्रमाणपत्र देकर गौरव किया गया हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरिशस की ओर से ।

दक्षिण मॉरिशस में हम माऊ पावरा, डोमेन वाल्केनो, काशी विश्वेश्वर मंदिर, ग्रीग्रीन सागर किनारा, पत्थरों का सागर किनारा, लाहोय क्लीप्लोया घुमे तो उत्तर मॉरिशस में अप्रवासी घाट, पोर्ट ल्युईस, ग्राम्बो बीच पर घुमें । इसी के साथ मॉल में खरीदारी हुई । वहाँ के खास मिल्क चॉकलेटस् लिये गये ।

सँडेनी स्ट्रीट पर गवर्नमेंट हिंदी टिचर्स युनियन द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया था । मा. सत्यदेव टेंगर मॉरिशस में हिंदी भाषा को स्थापित करने के लिए लंदन कोर्ट से केस जीतकर आये थे, हिंदी का गौरव करते हुए, हिंदी प्रेमीयों का भी गौरव किया । हिंदी के

बताई । हिंदी को आम जनता तक पहुँचाने के लिए इन्फॉर्मेशन टेक्नॉलॉजी का प्रयोग, व्यापार से हिंदी को जोड़ना, रोजी के बदले रोज की भाषा बनाना आदि बातों पर प्रकाश ड़ाला । आईटीसी को लेकर हिंदी काम आगे बढ़ाना है तथा लेखन को प्रकाशित करते हुए विश्व तक पहुँचाने की बातों पर गौर फर्माया गया ।

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरिशस में पहली बार भारतीय लोगों को प्रवेश मिला । भारत सरकार के साथ काम करने की अनुमति ली गई है । युनो द्वारा हिंदी को विश्वभाषा में शामिल किया जायेगा तथा राजनीति से परे होकर हिंदी का कार्य चलेगा । 2018 सन् में होनेवाले 'विश्व हिंदी साहित्य सम्मेलन' पर चर्चा हुई । मॉरिशस तथा भारत के संयुक्त तत्त्वावधान में बन रहे 'हिंदी भवन' का दर्शन किया ।

मॉरिशस बेट है और केवल 22 करोड लोकसंख्या है । उसे 'मिनी भारत' के नाम से भी जाना जाता है । भारतीय वंश की परंपरा का जतन किया गया है । सीखने जैसी बातें बहुत थी - स्वच्छता, पानी का जतन, परिवहन के नियम, श्रमप्रतिष्ठा, समय का सदुपयोग तथा महत्त्व, पर्यटकों का सम्मान, अधिक से अधिक काम करने की तैयारी, मातृभाषा के प्रति प्रेम, देशप्रेम आदि । अगर हम इनमें से कुछ बातों का पालन भी करें तो हमारा देश प्रगती पथ पर दौड़ लगा सकता है ।

◆

परिश्रम का महत्व

संतोष पाटोले
कार्यालय सहायक राजभाषा/रत्नागिरी,
कोंकण रेलवे, रत्नागिरी

सफलता की पहली कुंजी श्रम है, इसके बिना सफलता का स्वाद कभी भी नहीं चखा जा सकता है, जिंदगी में आगे बढ़ना है, सुख सुविधा से रहना है, एक मुकाम हासिल करना है, तो इन्सान को श्रम करना होता है, भगवान ने श्रम करने का गुण मनुष्यों के साथ-साथ सभी जीव जंतूओं को भी दिया हैं। पक्षी को भी सुबह उठकर अपने खाने पीने का इंतजाम करने के लिए बाहर जाना पडता है, उसे बड़े होते ही उड़ना सिखाया जाता है, ताकि वह अपना पालन पोषण खुद कर सके, दुनिया में हर जीव जंतू को, अपने पेट भरने के लिए खुद मेहनत करनी पड़ती है. इसी तरह मनुष्यों को भी बचपन से बड़े होते ही, श्रम करना सिखाया जाता है। चाहे वह पढ़ाई के लिए हो, या पैसे कमाने के लिए या नाम कमाने के लिए। मेहनत के बिना तो रद्दी भी हाथ नहीं आती।

देश दुनिया के प्रसिद्ध लोगों ने अपनी मेहनत परिश्रम के बल से ही दुनिया को ये अद्भुत चीजें दी हैं। आज हमारे महान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को ही देखिये, ये हफ्ते में सातों दिन 17-18 घंटे काम करते है, ये न कभी त्योहारों, न पर्सनल काम के लिए छुट्टी लेते है। देश का इतना बड़ा आदमी जिसे किसी को छुट्टी के लिए जबाब न देना पडे, वह तक परिश्रम करने से पीछे नहीं हटता है. देश को आजादी दिलाने के लिए महात्मा गाँधी ने जी-जान रात-दिन एक करके मेहनत की और आज इसका फल है कि हम आजाद है। कड़ी मेहनत एक कीमत है, जो हम सफलता पाने के लिए भूगतान करते है और जिससे जीवन में खुशियाँ ही खुशियाँ आती है, क्या है परिश्रम शारिरीक व मानसिक रूप से किया गया काम परिश्रम कहलाता है, ये काम हम अपनी इच्छा के अनुसार चुनते है, जिसे लेकर हम अपने उज्ज्वल भविष्य की कामना करते है. पहले श्रम का मतलब सिर्फ शारिरीक श्रम होता था, जो मजदूर या लेबर वर्ग करता था। लेकिन अब ऐसा नहीं है, डॉक्टर, इंजिनियर, वकील, राजनेता, अभिनेता-अभिनेत्री, टीचर, सरकारी व प्राइवेट दफ्तरों में काम करने वाला हर व्यक्ति श्रम करता है। परिश्रम की परिभाषा कामयाब व्यक्ति के जीवन से हम परिश्रम के बारे में अधिक जान सकते है, उनके जीवन से हमें इसकी सही परिभाषा समझ आती है. तो चलिए हम आज आपको कुछ बातें बता रही है, जो मेहनती व्यक्ति अपने जीवन में अपनाता है, और सफलता का स्वाद चखता है। यही बातें आदर्श हम अपने जीवन में उतार कर सफल हो सकते है।

समय की बर्बादी न करें :

कई लोग आलस का दामन थामे रहते है, वे लोग परिश्रम करने की जगह आराम से धीरे-धीरे काम करके जीवन बिताना चाहते है. परिश्रमी व्यक्ति कभी भी समय की बर्बादी में विश्वास नहीं रखता, वह निरंतर काम करते रहने में विश्वास रखता है, समय की बर्बादी आलसी, लोगों की निशानी है. कई बार ऐसा भी होता है की परिश्रम करते रहने से भी मन मुताबिक फल नहीं मिलता है, या फल मिलने में देरी होती है। लेकिन इस बात से हार मानकर नहीं बैठना चाहिए। परिश्रम व काम पर विश्वास से सही समय पर सहीं चीज मिल ही जाती है।

धन के पीछे न भागे :

परिश्रम का ये मतलब नही है की, पैसा कमाने की होड़ में लगे रहें। धन हमारी जिंदगी का बहुत बड़ा हिस्सा है, लेकिन धन ही जिन्दगी नहीं होती है। धन के पीछे परिश्रम करने से दुनिया की सुख सुविधा तो मिलती है, लेकिन कई बार मन की शांति नहीं मिलती। परिश्रम का ये मतलब नहीं की आप जिन्दगी जीना छोड़ दे, और पैसे कमाने में लग जाएँ। परिश्रम

करते हुए, अपने लोगों को साथ लेकर जीवन में आगे बढ़े।

परिश्रम के फायदे/ लाभ :

आपको जीवन की सारी सुख सुविधा मिलेंगी, लक्ष्मी की प्राप्ति होगी। आज के समय में धन जिसके पास है, वो दुनिया खरीद सकता है। परिश्रम से मानसिक व शारीरिक चुस्ती मिलती है। आज के समय में परिश्रम नहीं करने पर बहुत सी बीमारियाँ शरीर में घर कर लेती है। इसलिए फिर तंदुरुस्ती, स्फूर्ति के लिए शारिरीक श्रम करने को बोला जाता है, जिस वजह से लोग फिर जिम में भी समय बिताने लगते है। मानसिक विकास के लिए उसका परिश्रम करते रहना बहुत जरुरी है, इसी के द्वारा लोगों ने नए-नए अनुसन्धान दुनिया में किये है। परिश्रम से हमारे जीवन में व्यस्त रहती है, जिससे किसी भी तरह की नकारात्मक बातें हमारे जीवन में नहीं आ पाती, व इससे मन अंदर से शांति महसूस करता है। परिश्रमों व्यक्ति हमेशा सफलता की ओर अग्रसर रहता है, और समय-समय पर उसे सफलता का स्वाद भी चखने को मिलता है। आलसी व्यक्ति हमेशा दु:खी, परेशान होता है, वह अपने जीवन को कोसता ही रहता है. वह यहाँ वहां की सैतानी बातें सोचकर दु:खी रहता है। वह अपने हर काम के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पसंद करता है, उसे लगता है, कोई और उसकी जगह मेहनत कर दे। लेकिन ये दुनिया का सबसे बढ़ा सच है की अपना बोझ व्यक्ति को स्वयं उठाना पडता हैं, उसे अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए खुद ही परिश्रम करना होगा, इसमें उसकी मद्द कोई भी नहीं सकता। परिश्रमी के जीवन में प्रसन्नता, शांति सफलता बनी रहती है।

◆

भगवंता

भगवंता जर आहेत ही सारी तुझीच लेकुरे
का कुणी संत, कुणी असे लुटेरे?

एकाच मातेच्या उदरी जन्म घेऊनी
कुणी देशभक्त, कुणी गेला गद्दार होऊनी?

मेघराजा कुणीकडे थैमान मांडत बरसतो
कुणीकडे मात्र नयनांतील अश्रूसुद्धा आटून जातो?

डोळ्यांच्या पापण्यांतील ओलावा आज लुप्त झाला
कुणीकडे मात्र सात तरांचा बंगला थाटून झाला?

भगवंता जर तुझीच आहे ही समस्त अवनी
तर का असे ती बकाल, अतृप्त अन् सुनी?

रक्ताचं करुन पाणी, पिलांना ज्या वाढवलं
त्यांनीच आज आई-बापाला बेघर का केलं?

दुष्काळ, भूकंप, स्फोट, बलात्कार अन् उपासमार
एवढं कमी की काय म्हणून मुलगी गर्भातच ठार?

भगवंता जर तुझाच आहे सात्यांमध्ये अंश
जीव लावला त्यानेच का केला दंश?

इंदिरा, लता, सिंधु-सायना जर तुझ्याच आहेत ललना
भगिनी-मातांची अब्रू वेशीवरती नको टांगू ना!

सर्वांच्याच रक्ताचा रंग जर असतो लाल
धर्म-जातींच्या कललीत आम्ही का होतो हलाल?

भगवंता जर तुझीच आहे ही सारी निर्मिती
का कुणी बदनाम, कुणी गाजवतो किर्ती?

भगवंता साऱ्या लेकरांना तुम्हीच सुखात ठेवा
नको कोणता दुजाभाव नको कसलाही हेवादावा
अखंड ब्रह्मांडाच्या छाताडावर फक्त एक तिरंगा फडकता हवा !!

सूरज महादेव माने
बैंक ऑफ इंडिया

अभागी सुहागन

संकलन – श्रीमती अंजली राकेश पवार
वरिष्ठ टिकट परीक्षक, कोंकण रेलवे

दोस्तो....बेटी एक अभिशाप... यह मान्यता हमारे समाज में आज भी थोडी–सी शेष है। न जाने क्यों आज भी हमारे समाज में.. कई ऐसे घर परिवार है, जहाँ पर पुत्र की चाहत का इजहार किया जाता है अगर बेटी हुई तो उसका तिरस्कार किया जाता है... आज की स्थिति तो काफी बेहतर है... लेकिन कुछ समय पहले वास्तव काफी भयंकर था।

पहले के जमाने की एक ऐसी ही अभागी बेटी की कथा कविता माध्यम से प्रस्तुत कर रही हूँ ।.. एक व्यथा .. अभागी सुहागन उतर गयी थी.. उन सब के चेहरे की रौनक.. एक अपराधी भाव लिए...

माँ अपनी बेटी के पिता का सामना भी न कर पाई...

क्योंकि बेटी जैसी है...

(ऐसे ही समय बितता चला आ रहा है। बेटी अब थोडी बड़ी हूई और वह अब अपने भाई के साथ स्कूल जाना चाहती है।)

तभी... तभी एक और बेटी... जो अब उस बेटी की माँ है...

उसने अपनी ही बेटी को आँगन के कोने में पटक दिया..

कम्बकत ... छोरे से बराबरी कर रही है...

काँट के आँगन में ना गाड दूँगी।

सहम गई है... बेटी बेचारी

सोच रही है, मैं अभागी.. क्यों न जान पाई

कैसे बेटा बन कर जन्मते है।

(बिटियाँ अब थोडी और बड़ी हुई पुरे 15 साल की)

रिश्ता आया है..

छोरे की उम्र ज्यादा है तो क्या..

छोरे की क्या उम्र देखी जाती है..

पैंतीस बरस के पुरुष से पंद्रह बरस की मासूम का रिश्ता..

(बिटियाँ की अब शादी हो गई है... और वह अपने ससुराल आयी..!)

बेटी अपने घर में आ तो गयी पर..

कभी अपना सा न लगा ये घर..

समझ नही पाती है वो...

अगर ये घर उसका है तो क्यूं उसका पति

उसे उसके ही घर से बाहर निकाल कर फेकने का भय दिखाता है

बहुत... बार...

हर दिन बार एक नया कारण और वही पुरानी सजा..

निकल मेरे घर बाहर...

(बहुत समय निकल गया)

बेटी के बेटे और बेटियाँ अब बड़े हो गए है..

कब पल बए.. कहाँ पल गये...

उसे जैसे कुछ याद ही नही...

याद भी कैसे रख पाती..

कोख भर गयी थी.. बस इतना ही...

बच्चे कभी अपने से लगे ही नही..

दादी की भाषा बोले... पिता सा क्रोध दिखाते

उनमें वो सारी उम्र अपना अंश ही ढूँढती रह गयी।

शायद बिना माँ के भी संतान जन्मती ही होंगी

वो समझा ऐसी थी खुदको..

शरीर अब टूटने लगा है.. थकान पीछा ही नहीं छोडती..
क्या जाने के दिन आ गए..?
क्या जिन्दगी खतम होने को आई...
मैंने तो जिन्दगी कभी जी ही नही..
तो खतम होने का सवाल कहाँ...
और एक दिन गीला ठंडा बेजान शरीर..
रात में ही प्राण निकल गए..
(जमी भीड़ से आवाजे आ रही थी।)
बड़ी किस्मत वाली थी...
सुहागन गयी है..
तुम धाम से अर्थी उठेगी..
बेंड- बाजे के साथ..
आओ रे छोरियों
इस की माँग के सिंदुर से अपनी माँग भरलो सुहागन गयी है..

(कुमारी और ब्याही सब के बीच उस की अर्थी के नीचे निकलने को छेड सी लगी है)

और जिन्दगी भर घर से बाहर फैक देने वाला उसका पती आज बड़ी धूम धाम से.. गाजे वाजे के साथ उसे घर से बाहर ले जा रहा है... बड़े बाजे के साथ... बडे बाजे के साथ..

यह तो जी कुछ समय पहले की बात.. आज समाज बदल रहा है ... धीरे-धीरे ही सही लेकिन समाज बदल रहा है.. आज की बेटी हमारे लिए क्या है.. उसकी छोटीसी झलक..

कुदरत ने फिर धरती पर किया है करम...
शायद कही बेटी ने फिर लिया है जनम
बेटियाँ ईश्वर का एक हसीन वरदान
जीवन यदि संगीत है.. तो सरगम है बेटियाँ
बेटियाँ सचमूच एक माँ का हृदय होती है
दिल का सुकून होती है
मन के गीतों की प्यारी सी धुन होती है
बेटियाँ पराया धन नहीं होती..

(और शायद इस सोच की वजह से हमारी बेटियाँ आज क्या चाहती हैं.. इसका वर्णन देखिए.. क्या है अभिलाषा उनकी..)

उत्सुक गगन में उड़ जाऊ
नभ को छूंलु.. पंछी बनकर ...
मैं डोलू बाधीत सी निडर
जिस और चल हट जाए सभी...
नही चाहिए मुझ को कुछ भी..
झुमका, चन्दन, बिन्दिया, कंगन
देना हो तो दे देना मुझको
इतना वरदान प्रभु...
''जीवन में जी लूँ अपने ढंग से
लिख दूँ नये कानून- नियम..
बेटिया के मुँह से हट जाए
आँसू रोना चिन्ता की रेखाएँ सभी।''
फिर कोई नही बोले इस युग में..
'अबला जीवन हाय तुम्हारी, यही कहानी
आँचल में दूध और आँखो में है पानी''।

◆

संगोष्ठी का आयोजन

कारोबार विकास में राजभाषा हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान

श्री. संतोष पाठक, इंडियन ओवरसीज बैंक

श्री. सुहास विद्वांस, आकाशवाणी

श्री. ज्ञानेश्वर भातपुरे, सिंडिकेट बैंक

श्री. शैलेश कुमार मालवीय, बैंक ऑफ इंडिया

श्री. प्रदीप कांबले, बैंक ऑफ इंडिया

श्री. प्रदिप कांबले, बैंक ऑफ इंडिया

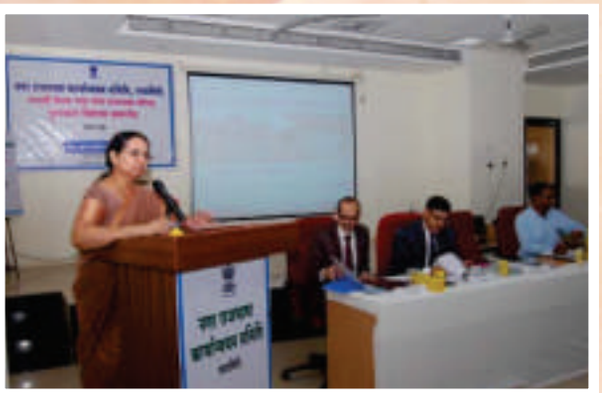

उप निदेशक डॉ. सुनिता यादव

सदस्य सचिव, श्री. रमेश गायकवाड

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए
वार्षिक कार्यक्रम 2017-18

कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	क से क क्षेत्र - 100% क से ख क्षेत्र - 100% क से ग क्षेत्र - 65% क से क व ख क्षेत्र - 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति	ख से क क्षेत्र - 90% ख से ख क्षेत्र - 90% ख से ग क्षेत्र - 55% ख से क व ख क्षेत्र - 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति	ग से क क्षेत्र - 55% ग से ख क्षेत्र - 55% ग से ग क्षेत्र - 55% ग से क व ख क्षेत्र - 85% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति
हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
हिंदी में डिक्टेशन / की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
हिंदी प्रशिक्षण (भाषा,टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोडकर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राईव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
कंप्युटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद।	100%	100%	100%
वेबसाइट	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)
नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)
1) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे/सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
2) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
3) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों / उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण
राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)
कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%		

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी

हिंदी पखवाडा दि. 14 सितंबर 2016 से 30 सितंबर 2016

नगर राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता 2015-16

पुरस्कार	संस्थान का नाम
प्रथम	कोंकण रेलवे
द्वितीय	आकाशवाणी
तृतीय	सीमा शुल्क कार्यालय
प्रोत्साहन	इंडियन ओवरसीज बैंक

प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता

आयोजक : बैंक ऑफ इंडिया 20/09/2016

पुरस्कार	संस्थान का नाम
प्रथम	श्री. मुकेश कुशवाह – सीमा शुल्क कार्यालय
द्वितीय	श्री. एन.आर. भोईनकर – समुद्री उत्पाद निर्यात
तृतीय	श्री. अंकित सिंह – सीमा शुल्क कार्यालय
प्रोत्साहन	श्री. कृष्णा कांत सिंह – सीमा शुल्क कार्यालय श्री. जितेंद्र कुमार मीना – आकाशवाणी

राजभाषा प्रश्नमंजूशा प्रतियोगिता

आयोजक : दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कं. 21/09/2016

पुरस्कार	संस्थान का नाम
प्रथम	श्री. मनोज वमा – ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स
द्वितीय	श्री. नितीन पाटील – इलाहाबाद बैंक श्री. मुकेश कुशवाहा – सीमा शुल्क कार्यालय
तृतीय	श्री. एन.आर. भोईनकर – समुद्री उत्पाद निर्यात श्री. शरद अग्रहरी – आकाशवाणी

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

आयोजक : सीमा शुल्क मंडल,कार्यालय 23/09/2016

पुरस्कार	संस्थान का नाम
प्रथम	श्री. मनोज वर्मा – ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स
द्वितीय	श्री. शरद अग्रहरी – आकाशवाणी
तृतीय	श्री. जितेंद्र कुमार मीना – आकाशवाणी
प्रोत्साहन	श्री. निमिष म्हाडेश्वर – ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स श्री. तन्मय शर्मा – सीमा शुल्क कार्यालय

हिंदी काव्य प्रतियोगिता

आयोजक : आकाशवाणी, रत्नागिरी 27/09/2016

पुरस्कार	संस्थान का नाम
प्रथम	श्री. सुरज माने – बैंक ऑफ इंडिया
द्वितीय	श्री. मनीष पडिया – बैंक ऑफ इंडिया
तृतीय	श्रीमती अंजली पवार – कोंकण रेलवे
प्रोत्साहन	श्री. अवधूत बाम – आकाशवाणी श्री. मुकेश कुशवाहा – सीमा शुल्क कार्यालय

आशुभाषण प्रतियोगिता

आयोजक : कोंकण रेलवे, रत्नागिरी 28/09/2016

पुरस्कार	संस्थान का नाम
प्रथम	श्री. शरद अग्रहरी – आकाशवाणी
द्वितीय	श्री. सुरज माने – बैंक ऑफ इंडिया
तृतीय	श्री. अब्दुल अजीज नाकाडे
प्रोत्साहन	श्री. तुषार माणिकराव – बैंक ऑफ इंडिया श्री. किरण खटावकर – दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कं. श्री. अनिल कोतवाल – विजया बैंक

हिंदी कार्यशाला

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में बैंक ऑफ इंडिया के ओर से कार्यशाला का आयोजन

कोर कमेटी सदस्य लक्ष्मीकांत भाटकर ने प्रजासत्ताक दिन के अवसर पर पौधों का वितरण किया

डी. पी. शेट्ये,
सहायक आयुक्त
सीमा शुल्क के करकमलों
से सभी स्टाफ सदस्यों को पौधे वितरित किये

सोच

– महेश सदाशिव जाधव
रत्नागिरी

आप हम और सभी से गुजारिश हैं की अपनी-अपनी सोच बदलने की जरूरत है, इसमें मनुष्य की हार भी और जीत भी । हम सोचते है रेल सेवा हमारी रेल संपत्ति है उसे हानि नही पहुंचानी चाहिए यह हमारी सोच है पर सोच का पालन कोई नहीं करता । सरकार कही जगह तरह तरह के बोर्ड लगाते है। कुछ लोग उस बोर्ड पर ही गंदगी करते है । उसे जान बुजकर अनदेखा कर देते है । सरकारी वस्तु है इसलिए किसी भी तरह उसका उपयोग करते है । रेलवे यह अपना खजाना है । और इस खजाने को अपनी ही संपत्ति समझे इस कारण उसे हानि ना पहुंचाएं दे । तो कोई भी इन्सान उसे संभालकर उपयोग करेगा क्योंकि अपनी किसी भी चीज या वस्तु का उपयोग कोई भी व्यक्ति सरल रूप से करता और इसी वजह से हमारी रेल सुरक्षित रखे यह सरकार की सोच होती है । पर नही हम किस प्रकार सोचते है हमारी सोच यहाँ आड़ आती है । सफर करते समय हमें ध्यान रखना चाहिए कि, हमें बिजली और पंखे की जरूरत है की नहीं यह भी ध्यान देना चाहिए । बेवजह बिजली का नाश नहीं करना चाहिए, बिजली की कमी भी है, उस के साथ पानी की भी, हमारे प्रकृति में 71% जमीन और 29% पानी है, पर हम आज की सोचते है, कल की नही । कल अपने बच्चे और अन्य लोगों को मिले या ना ।

आज देखिए प्रकृति हमसे नाराज है कारण हमारी सोच है इसलिए सोच को बदलने की जरूरत है । इन्सान किस प्रकार सोचता है, इस पर हर इन्सान का जीवन निर्भर रहता है हमारे जीवन में सोच का बहुत महत्व होता है । जब हमारी सोच सही होती है या जब हम सकारात्मक सोचते हैं तब हमारे सारे काम भी सही तरीके से पूरे हो जाते हैं । जिस व्यक्ति की सोच नकारात्मक होती है, वह हर चीज में नकारात्मक चीजें ढूंढने लगता है, जिससे उस व्यक्ति के हर काम सही नहीं हो पाते । वही सकारात्मक सोच रखने से हम सिर्फ अच्छाई खोजते है और जब हमारी सोच सकारात्मक बन जाती है तो उसके परिणाम भी सकारात्मक आने लगते है । यह सोच का ही अंतर होता है जहाँ कोई विद्यार्थी कक्षा में अच्छी सोच के कारण अच्छे नंबर ले आता है, तो कोई छात्र कक्षा में फेल हो जाता है । अगर आपको अपने जीवन में कुछ भी कामयाबी पानी है तो आपको आज से ही अपनी सोच सकारात्मक बनानी होगी । आज के दिन में पाने के लिए अपने भीतर सकारात्मक सोच का होना बहुत ही आवश्यक है । जीवन में सकारात्मक सोच के साथ-साथ अपने स्वभाव में भी सकारात्मक रवैया लाना जरूरी है । तो इन्सान आसानी से अपने सफलता के शिखर पर पहुंच सकता हैं । इंसान कई बार चाहकर भी अपनी जबान पर पूरी तरह काबू नहीं रख पाता, शब्दों में बहुत ताकद होती है । आप क्या कहते हैं और किस लहजे में कहते हैं, उससे आपके नाम, आपके करियर यहाँ तक की दूसरों के साथ आपके रिश्ते पर अच्छा या बुरा असर हो सकता हैं ।

बात करने का अपना तरीका कैसे सुधारे

हमारी बातों की शुरूआत हमारी सोच से होती है । इसलिए अगर आप बात करने का अपना तरीका सुधारना चाहते हैं, तो पहले आपको अपने सोचने के तरीके में सुधार लाना होगा । ध्यान दीजिए की, परमेश्वर के वचन में दी सलाहों को मानने से किस तरह आपकी सोच पर अच्छा असर हो सकता है, जिससे आपकी बोली में भी सुधार आए । अपने मन को अच्छी बातों से भरिए ।

''जो बातें सच्ची हैं, जो बातें गंभीर सोच-विचार के लायक हैं, जो बातें नेकी की हैं, जो बातें पवित्र और साफ-सुथरी हैं, जो बातें चाहने लायक हैं, जो बातें अच्छी मानी जातीं हैं, जो सद्गुण हैं और जो बातें तारीफ के लायक हैं, लगातार उन्हीं पर ध्यान देते रहो।''

बोलने से पहले सोचिए। ''ऐसे लोग हैं जिनका बिना सोच-विचार का बोलना तलवार की नाईं चुभता है, परन्तु बुद्धिमान के बोलने से लोग चंगे होते हैं।'' अगर आपके मुँह से अक्सर 'चुभनेवाली' बातें निकलती हैं, तो क्यों न कोशिश करें कि, कुछ भी बोलने से पहले आप उसके बारे में अच्छी तरह सोच लें।

विचार जो आपके सोचने का नजरिया बदल देंगे।

एक विचार या एक वाक्य हमारी जिंदगी की दशा और दिशा दोनों को बदल सकता है। ये विचारों की शक्ति ही होती है जो इन्सान से कुछ भी करा सकती है। एक विचार किसी मरते हुए इन्सान को जिंदगी दे सकता है। एक विचार ही इन्सान को दुर्जन से सज्जन और सज्जन से दुर्जन बना सकता हैं। एक विचार सोचने के तरीका को बदल देता हैं। वैसे तो इनमे से काफी बातें ज्यादातर लोगों को पता होंगी लेकिन जब कोई विचार बार-बार आँखो के सामने आता है तो वो दिमाग में छिप जाता हैं। कुछ विचार आपके लिए मददगार साबित होंगे।

1. जिसके पास उम्मीद हैं, वह लाख बार हार कर भी, नहीं हार सकता।
2. जो मन की पीड़ा को स्पष्ट रूप में नहीं कह सकता, उसी को क्रोध अधिक आता हैं।
3. नेक इंसान बनने के लिए वैसी ही कोशिश करो, जैसे खूबसूरत दिखने के लिए करते हो।
4. समस्या के बारे में सोचने से बहाने मिलते हैं, समाधान के बारे में सोचने पर रास्ते मिलते हैं।
5. महान बनने की चाहत तो हर एक में हैं.... पर पहले इंसान बनना अक्सर लोग भूल जाते हैं।
6. दो बातें इंसान को अपनों से दूर कर देती हैं, एक उसका .....अहम और दूसरा उसका .....वहम।
7. अहंकार दिखा के किसी रिश्ते को तोड़ने से अच्छा है कि, माफी माँगकर वो रिश्ता निभाया जाये।
8. अच्छे इंसान सिर्फ और सिर्फ अपने कर्म से पहचाने जाते हैं। क्योंकि अच्छी बातें तो बुरे लोग भी कर लेते हैं।
9. यदि किसी भूल के कारण कल का दिन दु:ख में बीता है तो उसे याद कर आज का दिन व्यर्थ में न बर्बाद करो।
10. इंसान को बोलना सीखने में तीन साल लग जाते हैं... लेकिन क्या बोलना है? ये सीखने में पूरी जिंदगी लग जाती हैं।
11. जिंदगी में अच्छे लोगों की तलाश मत करो, खुद अच्छे बन जाओ, आपसे मिलकर शायद किसी की तलाश पूरी हो जाए।
12. एक इंसान उस वक्त सबसे सच्चा होता है, जब वह कबूल कर लेता है की उसके भीतर एक झूठ बोलने वाला आदमी भी हैं।
13. गलती उसी से होती है जो काम करता है.... निकम्मों की जिंदगी तो दूसरों की बुराई खोजने में ही खत्म हो जाती है।
14. किसी शांत और विनम्र व्यक्ति से अपनी तुलना करके देखिए। आपको लगेगा की आपका घमंड निश्चय ही त्याग ने जैसा है।
15. इंसान जिंदगी में गलतियाँ करके उतना दु:खी नहीं होता हैं, जितना की वह बार-बार उन गलतियों के बारे में सोच कर होता है।
16. इंसान मकान बदलता है, वस्त्र बदलता है, संबंध बदलता है, फिर भी दु:खी रहता है क्योंकि, वह अपना स्वभाव नहीं बदलता...!
17. वाणी में भी अजीब शक्ति होती है... कड़वा बोलने वाले का शहद भी नहीं बिकता... और मीठा बोलने वाले की मिर्ची भी बिक जाती है...!
18. यदि जीवन में लोकप्रिय होना हो तो सबसे ज्यादा ''आप'' शब्द का, उसके बाद ''हम'' शब्द का और सबसे कम ''मैं'' शब्द का उपयोग करना चाहिए।
19. सच वह दौलत है जिसे पहले खर्च करो और जिन्दगी भर आनन्द लो। झूठ वह कर्ज है जिससे क्षणिक सुख पाओं पर जिन्दगी भर चुकाते रहो।
20. मनुष्य सुबह से शाम तक काम करके उतना नहीं थकता, जितना क्रोध और चिंता से एक क्षण में थक जाता हैं।

◆

समय की सोच महिला सशक्तिकरण

– निलेश वाडकर
कोंकण रेलवे, रत्नागिरी

'परिदृश्य बदल रहा है । महिलाओं की भागीदारी सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय रूप से बढ़ रही है । महिला सशक्तिकरण हो रहा है ।' ये कुछ चुनिन्दा पंक्तियां हैं जो यहा कदा अखबारों में, टीवी न्यूज चैनल पर, और नेताओं मे मुँह से सुनी जाती रही हैं ।

अपने क्षेत्र में खास उपलब्धियां हासिल करने वाली कुछ महिलाओं का उदाहरण देकर हम महिलाओं की उन्नती को दर्शाते हैं । पर अगर आप ध्यान दे तो कुछ अद्भुत करने वाली महिलाएं तो हर काल में रही है । सीता से लेकर द्रौपदी, रजिया सुल्तान से लेकर रानी दुर्गावति, रानी लक्ष्मीबाई से लेकर इंदिरा गांधी एवं किरण बेदी एवं सानिया मिर्जा । परन्तु महिलाओं की स्थिति में कितना परिवर्तन आया? और आम महिलाओं ने परिवर्तन को किस तरह से देखा?

दरअसल असल परिवर्तन तो आना चाहिए आम लोगों के जीवन में । जरूरत है उनकी सोच में परिवर्तन लाने की । उन्हें बदलने की । आम महिलाओं के जीवन में परिवर्तन, उनकी स्थिति में, उनकी सोच में परिवर्तन । यही तो है असली सशक्तिकरण ।

उनके खिलाफ अपराध बढ़ रहे हैं । कुछ चुनिंदा घटनाओं एवं कुछ चुनिंदा लोगों की वजह से कई सारी अन्य महिलाओं एवं लड़कियों के बाहर निकलने के दरवाजे बंद हो जाते हैं । जरूरत है बंद दरवाजों को खोलने की । जरूरत है रोशनी को अंदर आने देने की । प्रकाश में अपना प्रतिबिम्ब देखने की । उसे सुधारने की । निहारने की । निखारने की ।

इसी कड़ी में एक और दरवाजा है आत्म निर्भरता । आर्थिक आत्म निर्भरता ।

उन्हें बचपन से सिखाया जाता है की खाना बनाना जरूरी है । जरूरत है की सिखाया जाये की कमाना भी जरूरी है । आर्थिक रूप से सक्षम होना भी जरूरी है । परिवार के लिये नहीं वरना अपने लिए । पैसे से खुशियाँ नहीं आती, पर बहुत कुछ आता है, जो साथ खुशियाँ लाता है । अगर शिक्षा में कुछ अंश जोडें जाये जो आपको किताबी ज्ञान के साथ व्यवहारिक ज्ञान भी दे । आपकी कुशलता को उपयुक्त बनाये । आपको इस लायक बनाये की आप अपना खर्च तो वहन कर ही सके, तभी शिक्षा के मायने सार्थक होंगे ।

जरूरी नहीं की हर कमाने वाली लड़की डॉक्टर या टीचर हो । वह खाना बना सकती है । पार्लर चला सकती है । कपडे सी सकती है । उन्हें ये सब आता है । वे ये सब करती है । सिर्फ घर में उनके इसी हुनर को घर के बाहर लाना है । आगे बढ़ाना है ।

यह एक सोच है जरूरत है इस सोच को आगे बढ़ाने की उनकी कुशलता को उनकी जीवन रेखा बनाने की ताकि समय आने पर वे खुद का व्यवसाय कर सके । अपना परिवार चला सके । ये उन्हें गति देगा, दिशा देगा, आत्माभिमान देगा, आत्मविश्वास देगा, वे दबेगी नहीं । ठहरेगी नहीं ये एक खुशहाल भविष्य की कामना है । इस पर अमल करें आज नहीं, अभी करें ।

◆

महिला सशक्तिकरण

– योगेश पवार
कार्यवाह, कोंकण रेलवे, रत्नागिरी

हम महिला सशक्तिकरण के युग में जी रहे हैं । पूरी दुनिया में आज महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं । वे अब हर तरह से अपने जीवन एवं व्यवसाय से संबंधित निर्णय स्वयं लेने के लिए सशक्त हा चुकी हैं । उचित और पर्याप्त शिक्षा के बिना, महिलाओं को सशक्त व्यक्तित्वों में परिवर्तित नहीं किया जा सकता । उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि वे एक ज्ञानवान समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें ।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति शहरी क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं की तुलना में ज्यादा दयनीय है । यह सर्वविदित है की महिलाएं पुरुषों के समकक्ष समान अधिकार से वंचित हैं और विकास के लिए महत्वपूर्ण संसाधनों के उत्पादन में भी उनका योगदान एवं भागीदारी कम होने की वजह से वे शक्तिहीन बने रहने को मजबूर हैं । इसलिए यदि हमें महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को समग्रता से प्राप्त करना है तो महिलाओं को पुरुषों के साथ सक्रिय भागीदार बनाना होगा । किसी भी समाज में आधुनिकीकरण के प्रयासों को सफल बनाने के लिए महिलाओं को विकास की मुख्य धारा में शामिल करना जरूरी है ।

प्रभावी संचार कौशल के विकास के बिना, महिलाएं अपनी आवाज बुलंद नहीं कर सकतीं । सफल होने के लिए उनका प्रभावी ढंग से संवाद कर पाना उनके लिए जरूरी है । एक परिवार, टीम या कंपनी को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने के लिए, नेताओं के रूप में, उन्हें लोगों को अपनी बात समझाने की आवश्यकता है ।

महिला सशक्तिकरण के द्वारा ये संभव है की एक मजबूत अर्थव्यवस्था के महिला–पुरुष समानता वाले देश को पुरुषवादी प्रभाव वाले देश से बदला जा सकता है । महिला सशक्तिकरण की मदद से बिना अधिक प्रयास किये परिवार के हर सदस्य का विकास आसानी से हो सकता है । एक महिला परिवार में सभी चीजों के लिये बेहद जिम्मेदार मानी जाती है अत: वो सभी समस्याओं का समाधान अच्छी तरह से कर सकती है । महिलाओं के सशक्त होने से पूरा समाज अपने आप सशक्त हो जायेगा ।

◆

समय

टिक ना सका इसके आगे, बड़े से बड़ा धनवान.....
समय बीत जाने पर, तुम बहुत पछताओगे
इतना अच्छा समय भला, तुम दोबारा कब पाओगे
समय बीत जाने पर इंसान बहुत पछताता है.....
व्यर्थ बिताया गया समय, भला कौन कहाँ कब पाता है
जो नहीं पहचानते हैं समय का मोल.....
कर नहीं पाते कोई भी अच्छा काम
नहीं कर पाते वो जग में ऊँचा अपना नाम....
अगर जीवन में कुछ करना है....
सबसे आगे बढ़ना है तो, समय के महत्व को पहचानो
और बढ़ाओ और अपना मान....

– मिलिंद शिवराम बेटकर
कोंकण रेलवे

भ्रष्टाचार उन्मूलन में सूचना प्रोद्योगिकी का योगदान

– मुकेश कुमार
परिक्षेत्र, लोटे, रत्नागिरी मंडल

अनैतिक तरीकों का इस्तेमाल कर दूसरों से कुछ फायदा प्राप्त करना भ्रष्टाचार कहलाता है । देश और व्यक्ति के विकास में ये अवरोध का एक बड़ा कारक बनता जा रहा है । भ्रष्टाचार तो विरासत में मिली ऐसी संपत्ति है, जिसे लोग दिन प्रतिदिन बढ़ावा देकर देश को खोकला कर रहे है । पुराने समय में जब भारत अंग्रेजों का गुलाम हुआ करता था, उस समय ''फूट डालो और शासन करो'' की नीति के साथ भ्रष्टाचार ने भारत में जन्म ले लिया था । बड़े-बड़े राजा- महाराजा ने भी अंग्रेजों के साथ मिलकर सत्ता और पूँजी के लालच में लिप्त होकर भ्रष्टाचार बढ़ा दिया । तब से लेकर आजतक भ्रष्टाचार बहुत तीव्रता से बढ़ रहा है । भ्रष्टाचार एक जहर है जो देश, संप्रदाय और समाज के गलत लोगों के दिमाग में फैला होता है । इसमें केवल छोटी सी इच्छा और अनुचित लाभ के लिए सामान्य जन के संसाधनों की बर्बादी की जाती है । इसका संबंध किसी के द्वारा अपनी ताकद और पद का गैर जरूरी और गलत इस्तेमाल करना है, फिर चाहे वो सरकारी या गैर सरकारी संस्था हो । इसका प्रभाव व्यक्ति के विकास के साथ ही राष्ट्र पर भी पड़ रहा है और वही समाज और समुदायों के बीच असमानता का बड़ा कारण है । साथ ये राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से राष्ट्र के प्रगति और विकास में बाधा भी है । भ्रष्टाचार से व्यक्ति सार्वजनिक संपत्ति, शक्ति और सत्ता का गलत इस्तेमाल अपनी आत्म-संतुष्टी

और निजी स्वार्थ की प्राप्ति के लिए करता है । इसमें सरकारी नियम-कानूनों की धज्जियाँ उड़ाकर फायदा पाने की कोशिश होती है । भ्रष्टाचार की जड़े समाज में गहराई से व्याघ्र हो चुकी है और लगातार फैल रही है । ये कैंसर जैसी बीमारी की तरह है जो बिना इलाज के खत्म नहीं होगी । इसका एक सामान्य रूप पैसा और उपहार लेकर काम करना दिखाई देता है । कुछ लोग अपने फायदे के लिये दूसरों के पैसों का गलत इस्तेमाल करते है । सरकारी और गैर सरकारी कार्यालयों में काम करनेवाले भ्रष्टाचार में लिप्त होते है और साथ ही अपनी छोटीसी इच्छा की पूर्ति के लिए किसी भी हद तक जा सकते है ।

हम सभी भ्रष्टाचार से अच्छे तरह वाकिफ है और ये अपने देश में नई बात नहीं है । इसने अपनी जड़े गहराई से लोगों के दिमाग में बना ली है । ये एक धीमे जहर के रूप में प्राचीन काल से ही समाज में रहा है । ये मुगल साम्राज्य के समय से ही मौजूद रहा है और रोज अपनी नई उँचाई पर पहुँच रहा है । साथ-साथ ये बड़े पैमाने पर लोगों के दिमाग पर हावी हो रहा है । भ्रष्टाचार एक ऐसा लालच है जो इंसान के दिमाग को भ्रष्ट कर रहा है और लोगों के दिलों से इंसानियत और वास्तविकता को खत्म कर रहा है । भ्रष्टाचार कई प्रकार का होता है जिससे अब कोई भी क्षेत्र छुटा नहीं है चाहे वो शिक्षा, खेल या राजनीति कुछ भी हो । इसकी बजह से लोग अपनी जिम्मेदारियों को नहीं समझते । चोरी, बेईमानी, सार्वजनिक संपत्तियों की बर्बादी, शोषण, घोटाला और अनैतिक आचरण इत्यादि सभी भ्रष्टाचार की ही

वस्तू एवं सेवाकर (जीएसटी) – देश की आर्थिक प्रगति में एक नया अध्याय

– अवनीश सैनी
रत्नागिरी

वस्तू एवं सेवाकर भारतवर्ष के स्तर सुधार ढाँचे में एक गौरवशाली कदम है । वस्तू एवं सेवाकर एक अप्रत्यक्ष कानून है । वस्तू एवं सेवाकर वर्तमान समय में देश एवं राज्योंद्वारा लागू सभी अप्रत्यक्ष करों का एक सार रूप है जो भारत को एक एकीकृत बाजार का रूप प्रदान करेगा । वस्तू एवं सेवाकर विनिमयता से लेकर उपभोक्ता तक वस्तुओं एवं सेवाओं की आपूर्ति पर एक एकल समग्र कर है । प्रत्येक चरण पर भुगतान किये गये आवक करों का लाभ मूल्य संवर्धन के बाद के चरण में उपलब्ध होगा जो प्रत्येक चरण में मूल्य संवर्धन पर वस्तू एवं सेवाकर को आवश्यक रूप से एक कर का रूप बना देता है । अन्तिम उपभोक्ताओं को इस प्रकार आपूर्ति श्रृंखला में अंतिम डीलर द्वारा लगाया गया वस्तू एवं सेवाकर ही वहन करना होगा । वस्तू एवं सेवाकर को इस दशक का सबसे अहम आर्थिक सुधार माना जा रहा है । वस्तू एवं सेवाकर लागू होने के बाद वस्तुओं एवं सेवाओं पर प्रत्येक चरण में लगने वाले सभी कर एक कर में समाहित हो जायेंगे । इससे सम्पूर्ण भारत में वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें लगभग एक हो जायेगां । उत्पादन लागत घटेगी, जिससे उपभोक्ताओं के लिए सस्ता सामान उपलब्ध होगा ।

अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था में कर–भार अन्तिम उपभोक्ता को वहन करना पड़ता है लेकिन कर संग्रहण का कार्य व्यवसायिकों द्वारा किया जाता है और उसमें से अपनी आवक क्रेडिट (खरीदे गये माल पर चुकाये कर) को घटाकर बाकी कर सरकार को जमा करवाते है ।

वर्तमान संरचना में केन्द्र सरकार द्वारा केंद्रीय उत्पाद शुल्क व सेवाकर और राज्य सरकार द्वारा बिक्री कर लगाया जाता है । इस कारण व्यवसायी को उत्पाद शुल्क और सेवाकर के भुगतान में विक्री कर की आवक क्रेडिट का उपयोग वही कर सकता और विक्री कर के भुगतान में सेवाकर और उत्पाद शुल्क की क्रेडिट कराधान लग जाता है जिससे वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतें बढ़ जाती है ।

वस्तू एवं सेवाकर लागू होने से सम्पूर्ण भारत में एक ही प्रकार अप्रत्यक्ष कर होगा जिससे व्यवसाईयों को खरीदी गई वस्तुओं और सेवाओं पर चुकाये गये वस्तू एवं सेवाकर की क्रेडिट मिल जायेगी जिसका उपयोग वह बेची गयी वस्तू एवं सेवाओं पर लगे वस्तू एवं सेवाकर के भुगतान में कर सकेगा । इससे टैक्स केवल मूल्य संवर्धन पर ही लगेगा और दोहरे कराधान की व्यवस्था समाप्त हो जायेगी जिससे लागत में कमी आयेगी और उत्पाद उपभोक्ताओं को कम मूल्यपर उपलब्ध होगा ।

संघीय ढाँचे को बनाये रखने के लिए वस्तू एवं सेवाकर दो प्रकार का होता – केन्द्रीय वस्तू एवं सेवाकर एवं राज्य वस्तू एवं सेवाकर । केन्द्रीय उत्पाद शुल्क का हिस्सा केन्द्र को और राज्य उत्पाद शुल्क एवं सेवाकर का हिस्सा राज्य को प्राप्त होगा । एक राज्य से दूसरे राज्य में वस्तूओं एवं सेवाकर की विक्री की स्थिति में स्वीकृत वस्तू एवं सेवाकर लगेगा, जिसका एक हिस्सा केन्द्र सरकार को एवं

दूसरा हिस्सा वस्तू एवं सेवाकर का उपयोग करनेवाले राज्य को प्राप्त होगा।

व्यवसायी खरीदी गई वस्तुओं एव सेवाओं में लगनेवाले कर की आवक क्रेडिट ले सकेंगे जिसकर उपयोग वे बेची गई वस्तुओं एवं सेवाओं पर लगनेवाले वस्तू एवं सेवाकर के भुगतान में कर सकेंगे । केन्द्रीय वस्तू एवं सेवाकर आवक क्रेडिट कर उपयोग एकीकृत वस्तू एवं सेवाकर एवं केन्द्रीय वस्तू सेवाकर के जावक क्रेडिट में भूगतान, राज्य वस्तू व सेवाकर क्रेडिट का उपयोग राज्य वस्तू व सेवाकर एवं एकीकृत वस्तू एवं सेवाकर के जावक कर से भुगतान और एकीकृत वस्तू व सेवाकर क्रेडिट कर उपयोग एकीकृत, केंद्रीय व राज्य वस्तू व सेवाकर के जावक कर के भुगतान में किया जा सकेगा।

वस्तू एवं सेवाकर के तहत सभी व्यवसायी, उत्पादक, सेवाप्रदाता को पंजीकृत होना होगा जिनकी वर्षभर में विक्री का मूल्य एक निश्चित मूल्य से ज्यादा है । प्रस्तावित वस्तू एवं सेवाकर में व्यवसायिओं को मुख्यत: तीन प्रकार के अलग अलग कर विवरणी भरने होंगे जिसमें आवक कर, जावक कर एवं एकीकृत विवरणी शामिल हैं।

अप्रत्यक्ष करों का अंतिम भार अंतिम उपभोक्ता को ही वहन करना पड़ता है । वर्तमान व्यवस्था में एक ही वस्तू एवं सेवाकर अलग-अलग कर लगते है लेकिन वस्तू एवं सेवाकर लागू होने के बाद वस्तू एवं सेवाओं पर केवल एक ही कर आरोपित होगा । जिससे वस्तू एवं सेवाओं की कीमतों में कमी आयेगी और अंतिम उपभोक्ता को वस्तू एवं सेवा कम कीमत पर उपलब्ध होगी । पूरे भारत में एक ही कर लगेगा जिससे सभी राज्यों में वस्तुओं और सेवाओं की कीमत एक समान हो जायेंगी ।

वस्तू एवं सेवाकर लागू होने के बाद वर्तमान समय में व्यवसायिकों के समक्ष आनेवाली जटिलताओं और परेशानियों से छुटकारा मिलेगा और व्यवसाय करने में आसानी होगी क्योंकि वस्तू एवं सेवाकर लागू होने के बाद उन्हे केवल एक ही कर संरचना का पालन करना होगा।

इस प्रकार से प्रस्तावित वस्तू एवं सेवाकर व्यवस्था कर संरचना में एक सुधार साबित होगा जिससे व्यवसायी, निर्माता एवं सेवाप्रदाता को वर्तमान जटिलताओं एवं परेशानियों से छुटकारा मिलेगा और व्यवसाय करने में सुविधा होगी जिसके परिणामस्वरूप वस्तू एवं सेवा के मूल्य में कमी आयेगी और जिसका अन्तिम फायदा उपभोक्ता को होगा । और इसका सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा और देश की अर्थव्यवस्था में सुधार होगा । और भारतीय उत्पादों को अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर प्रतिस्पर्धा करने में आसानी होगी।

इस प्रकार से वस्तू एवं सेवाकर (जीएसटी) देश की आर्थिक प्रगति में एक नया अध्याय साबित होगा । ऐसी हम सभी देशवासी कामना करते है।

◆

काव्य प्रवाह

उठो युवाओं, उठो युवाओं

उठो युवाओं, उठो युवाओं।
समय है ये करके दिखाओ।
दानवता चाहे ललकारे,
जुड़ो एक से एक हो जाओ।

नारी का सम्मान है करना।
जुल्म से नहीं हमें अब डरना।
माता पिता की आज्ञा मान कर,
सतगुरु के वचनों पर चलना।
अब न रुको न समय गवाओ।
सत्य प्रेम के गुण अपनाओ ।
उठो युवाओं, उठो युवाओं.....

घर-घर में कर दो उजियारा ।
मनमत से अब करो किनारा।
गफलत की निद्रा को त्यागो।
भटके न मन बन आवारा ।
नफरत त्यागो प्यार बढ़ाओ ।
मानवता की ज्योति जलाओ ।
उठो युवाओं, उठो युवाओं.....

न कोई हिन्दू न कोई मुस्लिम,
भाईचारा तुम फैलाओ ।
बोल बहुत हैं बोले अब तक ।
भोईनकर कर्म किए न अब तक।
सतगुरु के वचनों पर चलकर ,
अब इस जीवन को महकाओ।
उठो युवाओं, उठो युवाओं.....

श्री. नामदेव आर भोईनकर
तकनीकी सहायक
एमपीईडीए, सटेलाइट सेंटर, रत्नागिरी

इकाई है । इसकी जड़े विकसित और विकासशील दोनों तरह के देशों में व्याप्त है । समाज में समानता के लिए अपने देश से भ्रष्टाचार को पूरी तरह से मिटाने की जरूरत है । हमें अपनी जिम्मेदारियों के प्रति निष्ठावान होना चाहिए और किसी भी प्रकार के लालच में नहीं पड़ना चाहिए । वर्तमान में भ्रष्टाचार फैलनेवाली बीमारी की तरह हो चुका है जो समाज में हर तरफ दिखाई देता है ।

भारत के वो महान नेता जिन्होंने अपना पूरा जीवन भ्रष्टाचार और सामाजिक बुराईयों को मिटाने में लगा दिया लेकिन हमारे लिए ये शर्म की बात है कि, आज उनके दिखाये रास्तों की अनदेखी कर हम अपनी जिम्मेदारियों से भागते है । धीरे-धीरे इसकी पैढ़ राजनीति, व्यापार, सरकार और आमजनों के जीवन पर बढ़ती जा रही है । लोगों की लगातार पैसा, ताकद, पद और आलिशान जीवनशैली की भूख को वजह से ये घटने के बजाय दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रहा है । पैसों की खातिर हम लोग अपनी वास्तविक जिम्मेदारी को भूल चुके है । हम लोगों को ये समझना होगा कि पैसा ही सबकुछ नही होता, साथ ही ये एक जगह टिकता भी नही है । हम इसे जीवनभर के लिए साथ नहीं रख सकते, ये केवल हमें लालच और भ्रष्टाचार देगा । हमें अपने जीवन में मूल्यों पर आधारित जीवन को महत्व देना चाहिए ना कि पैसों पर आधारित । ये सही है कि सामान्य जीवन जीने के लिए ढ़ेर सारे पैसों की आवश्यकता होती है जबकि सिर्फ अपने स्वार्थ और लालच के लिए ये सही नही है ।

अपनी व्यक्तिगत संतुष्टि के लिए शक्ति, सत्ता, पैसा और सार्वजनिक संसाधनों का दुरुपयोग है भ्रष्टाचार । सूत्रों के मुताबिक, पूरी दुनिया में भ्रष्टाचार के मामले में भारत का स्थान 85 वाँ है । भ्रष्टाचार सबसे अधिक सिविल सेवा, राजनीति, व्यापार और दूसरे गैर कानूनी क्षेत्रों में फैला है । भारत विश्व में अपने लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए प्रसिद्ध है लेकिन भ्रष्टाचार की वजह से इसको क्षति पहुँच रही है । इसके लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार हमारे यहाँ के राजनीतिज्ञ है जिनको हम अपनी ढ़ेरों उम्मीदों के साथ वोट देते है, चुनाव के दौरान ये भी हमें बड़े-बड़े सपने दिखाते है लेकिन चुनाव बितते ही ये अपनी असली रंग में आ जाते है । हमें यकीन है कि जिस दिन ये राजनितिज्ञ अपने लालच को छोड देंगे उसी दिन से हमारा देश भ्रष्टाचार मुक्त हो जाएगा । हमें अपने देश के लिए सरदार पटेल और लालबहादूर शास्त्री जैसे ईमानदार और भरोसेमंद नेता को चुनना चाहिए क्योंकि केवल उन्ही जैसे नेताओं ने भारत में भ्रष्टाचार को खत्म करने का काम किया है । हमारे देश के साथ ही बढ़ते भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के लिए किसी ठोस कदम की आवश्यकता है ।

भ्रष्टाचार समाज में तेजी से फैलनेवाली बीमारी है । जिसने बुरे लोगों के दिमाग में अपनी जड़े जमा ली है । कोई भी जन्म से भ्रष्ट नही होता बल्कि अपनी गलत सोच और लालच के चलते धीरे-धीरे वो इसका आदि हो जाता है । किसी के एक गलत कदम से कई सारी जिन्दगियाँ प्रभावित होती है । हम एक अकेले अस्तित्व नहीं है, इस धरती पर हम जैसे कई और भी है इसलिए हमें दूसरों के बारें में भी सोचना चाहिए और सकारात्मक विचार के साथ जीवन को शांति और खुशी से जीना चाहिए । आज के दिनों में समाज में बराबरी के साथ ही आम जन के बीच में जागरूकता लाने के लिए नियम-कानून के अनुसार भारत सरकार ने गरीबों के लिए कई सारी सुविधाएँ उपलब्ध कराई है । जबकि सरकारी सुविधाएँ गरीबों की पहुँच से दूर होती जा रही है । क्योंकि अधिकारी अंदर ही अंदर गठ्ठे बनाकर गरीबों को मिलनेवाली सुविधाओं का बैदर बाँट कर रहे है । अपनी जेबों को भरने के लिए वो गरीबों की पेट काँट रहे है ।

समाज में भ्रष्टाचार के कई कारण है, आज के दिनों में राजनीतिज्ञ सिर्फ अपने फायदे की नीति बनाते है न कि राष्ट्रहित में । वो अपने को प्रसिद्ध करना चाहते है, जिससे उनका फायदा होता रहे, उन्हें जनता के हितों और जरूरतों की कोई परवाह नही । आज इंसानियत का नैतिक पतन हो रहा है और सामाजिक मूल्यों का ऱ्हास हो रहा है । भरोसे और ईमानदारी में आई गिरावट की वजह से ही भ्रष्टाचार अपने पाँव पसार रहा है । भ्रष्टाचार को सहने की क्षमता आम जनता के बीच बढ़ी है इसका विरोध करने के लिए समाज में कोई मजबूत लोकमंच नही है, ग्रामीण क्षेत्रों में फैली अशिक्षा, कमजोर आर्थिक ढाँचा आदि कई कारण भी जिम्मेदार है । भ्रष्टाचार के लिए सरकारी कर्मचारियों का कम वेतनमान उन्हें भ्रष्टाचार की ओर विमुख करता है ।

◆

वस्तू व सेवाकर का दायरा

– अभिषेक पाल
सेवा कर रेंज मंडल, रत्नागिरी.

वस्तू एवं सेवाकर बिल (प्रस्ताव) जो पिछले 15 वर्षो से लम्बित है, इस वर्ष यह शुरू (आरम्भ) होने के सुनहरे कागार पर है । वस्तू एवं सेवाकर भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने कि, दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है । माननीय श्री अटल बिहारी बाजपेयी की सरकार ने सर्वप्रथम सन 2000 में वस्तू एवं सेवाकर बिल प्रस्तावित किया था जिसे सन 2012 में काँग्रेस की सरकार ने भी लागू करने का प्रयास किया था लेकिन यह असफल साबित हुआ । वस्तू एवं सेवाकर देश की विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है । यह देश की सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) को भी बढ़ायेगा । वस्तू एवं सेवाकर (जी.एस.टी.) वस्तुत: सभी अप्रत्यक्ष करो का संकलन है । एक रिपोर्ट के अनुसार जी.एस.टी. से देश की आर्थिक वृद्धी 0.9% से 1.7% तक बढ़ जायेगी ।

जी.एस.टी. से देश में एक समान रूप से बाजार का निर्माण होगा जो देश के औद्योगिक घरानों और देश की अर्थव्यवस्था के लिए लाभदायक सिद्ध होगा । जी.एस.टी. एक प्रकार का अप्रत्यक्ष कर है जो सभी अन्य करों को जैसे, ऑक्ट्राय कर, केन्द्रीय बिक्री कर, राज्य स्तरिय बिक्री कर, उत्पाद शुल्क, सेवा कर, मूल्य आवर्धित कर (वैट) को समाप्त करके, केवल एक कर (जी.एस.टी) का स्थान लेगा । केन्द्र एवं राज्य दोनो, सभी वस्तू एवं सेवाए जो देश में है या देश में आयातित है उनपर जी.एस.टी. लगायेगी । जी.एस.टी. देश में कर के ढाँचे से अत्यन्त सरल बनायेगा और, करदाताओं की सीमा से बढ़ाकर देश में एक कामन बाजार को बनायेगा । यह देश में कर के दायरे को बढ़ाकर देश के जी.डी.पी. को भी बढ़ायेगा । एक रिपोर्ट के अनुसार जी.एस.टी. से निर्यात में लगभग 3.2% से 8.3% और आयात में 2.4% से 4.7% की वृद्धी के आसार है । एकीकृत जी.एस.टी. एक ऐसा उपाय है जिससे बहुविदेशी (मल्टीनेशनल) कम्पनियां भी देश की असंगठित क्षेत्रो की कम्पनियों से प्रतिस्पर्धा करेगी क्योंकि सभी के लिए कर संरचना एकसमान रूप से होगी । जी.एस.टी. संरचना के अन्तर्गत सभी कम्पनियों को उनके सप्लायर द्वारा पहले से ही दिये गये टैक्स में डिडक्शन (कटौती) मिलेगी ।

इसके परिणामस्वरूप प्रत्येक क्रेता (बायर) यह सुनिश्चित करेगा कि उसके आपूर्तिकर्ता (सप्लायर) ने उसके हिस्से के कर को जमा किया है । जी.एस.टी. यह उत्पादकों (प्रोड्यूसर) पर कर के बोझ को कम करके उनके विकास को प्रश्सत करेगा । जी.एस.टी. निर्यात पर कस्टम ड्यूटी को हटाकर विदेशों में प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देगा । जी.एस.टी. से भारतीय उत्पाद अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मक हो जायेगा और विभिन्न प्रकार के टैक्स बैरियर जैसे चेक प्वाइन्ट, टोल प्लाजा जिससे ट्रान्सपोर्टरो को अत्यन्त कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है उसे छुटकारा मिलेगा और इससे व्यापार करने की सगयता भी मिलेगी । जी.एस.टी. से पूरे व्यापार में एक पारदर्शिता आ जायेगी जो कम्पनियों एवं देश के विकास के लिए अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होगी । जी. एस.टी. से देश के ज्यादा से ज्यादा वेंडर और सप्लायर कर के दायरे में आयेंगे जिससे देश की आर्थिक प्रगति सुनिश्चित होगी । जी.एस.टी. से भारतवर्ष पूरे विश्व में (आर्थिक) मंच पर एक नया रोल अदा करने के लिए उतरेगा ।

जी.एस.टी. से भारतीय लौजिस्टिक क्षेत्र और मार्डन वेयरहाऊसिंग क्षेत्र में भी प्रगति के आसार है । जिससे देश की अर्थव्यवस्था निर्बंध रूप से आगे बढ़ने से तैयार रहेगी । जी.एस.टी. से कुछ खास क्षेत्र जैसे FMCG, फार्मा, आटोमोबाईल और इंजिनियरिंग क्षेत्र में विशेष रूप से वृद्धी की अपेक्षा है । जी.एस.टी. से रोजगार के अवसर में भी वृद्धी होगी और यह विदेशी कम्पनियों के निवेश को बढ़ावा देगा जिससे देश की आर्थिक वृद्धी (प्रगति) सुनिश्चित होगी । अत: यह कहा जा सकता है कि वस्तू एवं सेवाकर (जी.एस.टी.) देश की आर्थिक प्रगति की दिशा में एक नया अध्याय निश्चित रूख से साबित होगा ।

◆

वस्तु एवं सेवाकर की विशेषतांए (जीएसटी)

श्रीमती एस. एस. सारंग
केंद्रीय उत्पाद शुल्क, रत्नागिरी

वस्तु एवं सेवाकर अप्रत्यक्ष कर की श्रेणी में आएगा । जीएसटी वह वैट है जिसमें वस्तूओं और सेवाओं दोनो पर ही लागू किया जाएगा । वर्तमान में वैट केवल वस्तूओं पर ही लागू होता है । जीएसटी होने के बाद सेल्स टैक्स, सर्विस टैक्स, एक्साईज ड्यूटी, वैट आदि तमाम तरह के टैक्स हटा दिए जाएंगे । इसमें पूरा देश एकीकृत बाजार में बदल जाएगा । भारत ये वस्तू एवं सेवाकर विधेयक एक समान मूल्य वर्धित कर लगाने का प्रस्ताव है । इस कर को वस्तू एवं सेवाकर (जीएसटी) कहाँ गया है । जो पूरे देश में निर्मित उत्पादों और सेवाओं के विक्रय एवं उपभोग पर लागू होगा । जिसका उद्देश्य राज्यों के बीच वित्तिय बाधाओं को दूर करके एक समान बाजार को बांध कर रखना है । यह संपूर्ण भारत में वस्तूओं और सेवाओं पर लगाया जानेवाला एकल राष्ट्रीय एक समान कर है । वर्तमान में अप्रत्यक्ष कर प्रणाली, आपूर्ति श्रृंखला के विभिन्न स्तरों पर केंद्र और राज्यों द्वारा लगाया जानेवाला बहु-स्तरीय करों में फँसी हुई है, जैसे अबकारी कर, चूंकि केन्द्रीय विक्रीयकर (CST) और मूल्यवर्धित कर इत्यादि । जीएसटी में से सभी कर एक एकल शासन के तहत सम्मिलित हो जायेंगे ।

यदि अपनाया गया, तो जीएसटी विसंगतियों को दूर कर के प्रशासन को अत्यंत सरल बना देगा । केंद्र और राज्य वस्तूओं और सेवाओं पर समान दरोंपर कर अधिरोपीत करेंगे । उदाहरणार्थ, यदि किसी वस्तू पर 20 प्रतिशत मान्य दर है, तो केंद्र और राज्य दोनों 10-10 प्रतिशत कर संग्रहित करेंगे ।

* जीएसटी के लाभों को संक्षेप में इस प्रकार बताया जा सकता है ।

1) आसान अनुपालन - एक मजबूत और व्यापक सूचना प्रायोगिक प्रणाली भारत में जीएसटी व्यवस्था की नीव होगी इसलिए पंजीकरण, रिटर्न, भुगतान आदि जैसी सभी कर भुगतान सेवाएं कर दाताओं को ऑनलाईन उपलब्ध होगी जिससे इसका अनुपालन बहुत सरल और पारदर्शी हो जाएगा ।

2) कर दरों और संरचनाओ की एकरूपता - जीएसटी यह सुनिश्चित की अप्रत्यक्ष कर दरों और ढाँचे पूरे देश में एक समान है । इससे निश्चितता में तो बढ़ोत्तरी होगी और व्यापार करना आसान हो जाएगा । दूसरे शब्दों में जीएसटी देश में व्यापार के कामकाज को कर तटस्थ बना देगा फिर चाहे व्यापार करने की सीमाओं से बाहर टॅक्स क्रेडिट की सुचारू प्रणाली से यह सुनिश्चित होगा की करो पर कम से कम कराधान हो, जिससे व्यापार करने में आनेवाली छुपी हुई लागत कम होगी ।

3) प्रतिस्पर्धा में सुधार - व्यापार करने में लेन-देन लागत घटने से व्यापार और उद्योग के लिए प्रतिस्पर्धा में सुधार को बढ़ावा मिलेगा ।

4) विनिर्माताओं और निर्यातकों को लाभ - जीएसटी में केंद्र और राज्यों के करो के शामिल होने और इनपुट वस्तूएं और सेवाएं पूर्ण और

व्यापक रूप से समाहित होने और केंद्रीय बिक्री कर चरणबन्ध रूप से बाहर हो जाने से स्थानीय रूप से निर्मित वस्तूओं और सेवाओं की लागत कम हो जाएगी । इससे भारतीय वस्तुओं और सेवाओं की आंतर्राष्ट्रीय बाजार में होनेवाली प्रतिस्पर्धा में बढ़ोतरी होगी और प्रक्रियाओं की एकरूपता से अनुपालन लागत घटाने में लंबा रास्ता तय करना होगा ।

उपभोक्ता के लिए :–

1) वस्तूओं और सेवाओं के मूल्य के अनुपाती एकल एवं पारदर्शी कर – केंद्र और राज्यों द्वारा लगाए गए बहल करों या मूल्य संवर्धन के प्रगामी के अधीन विनिर्माता से लेकर उपभोक्ताओं तक केवल एक ही कर लगेगा, जिससे अंतिम उपभोक्ता पर लगने वाले करों में पारदर्शिता को बढ़ावा मिलेगा ।

2) समग्र कर भार में राहत – निपुणता बढ़ने और कदाचार पर रोक लगने के कारण अधिकांश उपभोक्ता वस्तूओं पर समग्र कर भार कम होगा, जिससे उपभोक्ताओं को लाभ होगा ।

केंद्र और राज्य सरकारों के लिए :–

1) सरल और आसान प्रशासन – केंद्र और राज्य स्तर पर बहुआयामी अप्रत्यक्ष करों को जीएसटी लागू करके हटाया जा रहा है । मजबूत सुचना प्रौद्योगिकी प्रणाली पर आधारीत जीएसटी केंद्र और राज्यों द्वारा अभी तक लगाए गए सभी अन्य प्रत्यक्ष करों की तुलना में प्रशासनिक नजरिए से बहुत सरल और आसान होगा ।

2) कदाचार पर बेहतर नियंत्रण – मजबूत सूचना प्रौद्योगीक बुनियादी ढाँचे के कारण जीएसटी से बेहतर कर अनुपालन परिणाम प्राप्त होंगे । मूल्य संवर्धन की श्रृंखला में एक चरण से दूसरे चरण में इनपूट कर क्रेडिट कर सुगम हस्तांतरण जीएसटी के स्वरूप में एक अंत: निर्मित तंत्र है, जिससे व्यापाररह को कर अनुपालन में प्रोत्साहन दिया जाएगा ।

3) अधिक राजस्व निपुणता – जीएसटी से सरकार के कर राजस्व की वसूली लागत में कमी आने की उम्मीद है । इसलिए इससे उच्च राजस्व निपुणता को बढ़ावा मिलेगा ।

◆

काव्यतीर्थ– कवी केशवसुत

– नलिनी विष्णु खेर
कार्यवाह, केशवसुत स्मारक व्यवस्थापन समिती,
मालगुंड,ता. जि. रत्नागिरी

निसर्ग सौंदर्याची मुक्त उधळण असलेला महाराष्ट्रातील एक प्रदेश म्हणजे कोकण! याच कोकणातील गर्द वनराईने नटलेले, विशाल, स्वच्छ, सुंदर समुद्र कीनाऱ्याचे सान्निध्य लाभलेलं, श्रीक्षेत्र गणपतीपुळ्यापासून केवळ दोन अडीच कीमी लांब असलेलं एक टुमदार गाव मालगुंड! जेमतेम चारपाच हजार लोकवस्ती असलेला या सुसंस्कृत गावाला मात्र एका महान क्रांतीकारी मराठी कवींचा तितकाच वारसा लाभला आहे! त्यांनी या गावाचा नामोल्लेख 'माल्यकूट' असा केला आहे तो कवी म्हणजेच कृष्णाजी केशव दामले तथा 'केशवसुत'.

केशवसुतांचा जन्म याच माल्यकुटात १५ मार्च, १८६६ मध्ये झाला. मात्र ७ ऑक्टोबर ही तारीख त्यांची जयंती म्हणून साजरी केली जाते. पण मालगुंड सारख्या त्यावेळच्या अत्यंत छोट्याशा गावात जन्मलेल्या, क्रांतीकारी नवविचारांची 'तुतारी' स्वप्राणाने फुंकणाऱ्या या कवीचे नाव आज केवळ महाराष्ट्रातच नव्हे तर देश–विदेशात पोहचले आहे. महाराष्ट्राच्या 'साहित्य' नकाशावर अधोरेखित झाले आहे! मात्र त्यासाठी १९९० साल उजाडावं लागलं! या शतकातील शेवटच्या दशकात कविवर्यांच त्यांच्या जन्मगावी उभारले गेलेले सुंदर स्मारक ज्याच्यामुळे हे टुमदार गावही प्रसिद्धीच्या झोतात आलं! म्हणूनच या स्मारकाच्या उभारणीमागील प्रेरणा व त्याचे स्वरूप समजून घेणे आवश्यक वाटते.

१९६६ हे कविवर्यांचे जन्मशताब्दी वर्ष ''मालगुंड शिक्षण संस्थेच्या वतीने अनेक ख्यातनाम साहित्यकांच्या उपस्थितीत अत्यंत उत्साहाने संपन्न

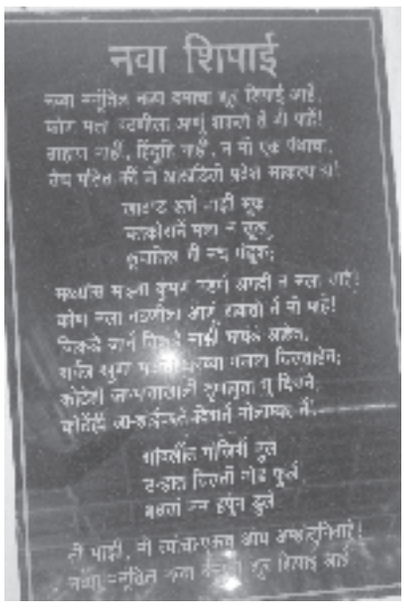

स्तरावरही या युगप्रवर्तक कविश्रेष्ठाचे त्याच्या जन्मगावी स्मारक होण्यासाठी अथक प्रयत्न केले. परंतु ते फलद्रुप झाले नाहीत. पण १९९० संपता संपता मालगुंडवासियांच्या सद्भाग्याने व कविवर्यांच्या आशीर्वादाने स्मारकाचे स्वप्न सत्यात उतरण्याचे जणु संकेतच मिळाले. नेमकं काय व कसं हे घडलं हे जाणून घेणे औचित्याचे ठरावे.

डिसेंबर १९९० मध्ये रत्नागिरी येथे ६४ वे अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलन भरले होते त्याचे अध्यक्ष होते सुप्रसिद्ध साहित्यिक पद्मश्री मधु मंगेश कर्णिक! संमेलनाच्या खुर्चीवर स्थानापन्न होण्यापूर्वी संमेलनाच्या पूर्व संध्येला मा. मधु भाई कविवर्यांना वंदन करून त्यांचा आशीर्वाद घेण्यासाठी अनेक साहित्यिकांसह मालगुंडला पोचले

त्यावेळी काढण्यात आलेल्या भव्य ग्रंथदिंडीचा समारोप भाईंच्या अध्यक्षतेखालील सभेने तर सभेचा समारोप 'कविवर्यांच्या स्मारकासाठी मी माझी सर्व पुण्याई पणाला लावीन आणि त्यांच्या लौकीकाला साजेसे स्मारक उभे करीन'' या त्यांच्या उद्घोषाने टाळ्यांच्या कडकडाट झाला.

मा. मधुभाई केवळ घोषणा करून थांबणाऱ्यापैकी नाहीत. त्यांनी अगदी ताबडतोब दुसऱ्याच दिवसांपासून या कामाची सुरुवात केली. खरं तर स्मारकाचा विचार खूप आधीपासून, १९६२ साली त्यांनी स्मारकाला भेट दिली तेव्हापासून त्यांच्या मनात घोळत होता. परंतु तेव्हा ते शक्य नव्हते. पण मालगुंड शिक्षण संस्थेने केशवसुतांच्या जन्मघरांची डागडुजी करून प्रथम तेथे इ. ४ थी पर्यंतची शाळा सुरू केली. नंतर ती शाळा स्थलांतरित करून तेथे मागासवर्गीयांसाठी वसतीगृह सुरू केले व केशवसुतांचा विचार प्रत्यक्ष आचरणातही आणला.

मात्र मधुभाईंनी स्मारकाची घोषणा केल्यानंतर खूप गोष्टी करणे आवश्यक होते. त्यादृष्टीने मा. भाई कामाला लागले. २४ मार्च, १९९१ रोजी त्यांनी 'कोकण मराठी साहित्य परिषदेची' रितसर स्थापना केली. स्मारकाची योजना तयार करून महाराष्ट्राच्या मुख्यमंत्र्यांना सादर केली. त्यानंतर राज्याचे तत्कालीन मुख्यमंत्री कै. सुधाकरराव नाईक व नंतरचे मुख्यमंत्री मा. शरदराव पवार यांनी प्रत्येकी दहा लाख रु. स्मारकासाठी देऊन या कामाला चालना दिली. अर्थात् मधुभाईंपुढे अशा कामांसाठी पैसे उभे करण्याची समस्या कधीच नसावे पण खरी मोठी समस्या होती ती जागेची! मात्र मालगुंड शिक्षण संस्थेने विनामोबदला एक एकर जागा स्मारकासाठी देऊन ही अडचण दूर केली व कवीच्या चिरंतन स्मारकाची मार्ग मोकळा झाला अशी होती या स्मारकामागील प्रेरणा. या प्रेरणेतून उभाराल्या गेलेल्या स्मारकाची वाटचाल समजून घेणे उचित ठरेल असे वाटते.

२६ जानेवारी, १९९२ रोजी प्रजासत्ताक दिनाचे औचित्य साधत मधुभाईंच्या शुभहस्ते स्मारक संकुलाचे भूमीपूजन झाले. तर ३० मार्च १९९२ ला मा. मुख्यमंत्री मधुकरराव चौधरी यांच्या शुभहस्ते अनेक मान्यवरांच्या उपस्थितीत पायाभरणी समारंभ उत्साहात पार पडला.

स्मारक संकुलाची संकल्पना मुंबईस्थित स्थापत्यकार श्री. अभय कुलकर्णी यांची तर सल्लागाराची जबाबदारी पार पाडली स्थापत्य विशारद फिरोज रानडे यांनी या वैशिष्टपूर्ण स्मारकाची भव्य व आकर्षक वास्तू अल्पावधीतच उभी राहिली. अनेकांना सानंदाधर्याचा गोड धक्का बसला! अन् ८ मे १९९४ मध्ये साहित्यिकांच्या व साहित्यप्रेमींच्या मांदियाळीत 'मौज'चे संस्थापक सुप्रसिद्ध साहित्यिक श्री. श्री. पु. भागवत यांचे अध्यक्षतेखाली व कुसुमाग्रजांच्या शुभहस्ते स्मारकाचे शानदार उद्घाटन झाले. व्यासपीठावर न बोलण्याची अट घालून बसलेल्या कुसुमाग्रजानाही बोलल्याशिवाय राहवले नाही भाषणाच्या शेवटी ते म्हणाले, 'हे केवळ दगडमातीचे स्मारक नाही हे काव्यतीर्थ आहे आणि मालगुंड ही कवितेची राजधानी आहे.'' त्यांचे हे उत्स्फूर्त उद्गार आज अगदी सार्थ ठरले आहेत.

स्मारकाच्या उभारणीत कै. माधव गडकरींसह अनेक संस्ता, व्यक्ती व शासनाचे सहकार्य मधुभाईंना त्यांच्या माणसे जोडण्याच्या स्वभावामुळे सहजपणे लाभले. स्मारकाची उभारणी करताना केशवसुतांचे जन्मघर त्यांच्या कोकणी बाणाला यत्किंचितही धक्का न लावता दुरुस्त करण्यात आले. स्मारक संकुलातील दोन भव्य दालनांपैकी एक 'आधुनिक मराठी काव्य संपदा दालन असून त्यात १८८५ ते १९८५ या कालखंडातील मराठी कवितेला सर्वोच्च स्थान प्राप्त करून देणाऱ्या ६६ कवींची रेखाचित्रे त्यांच्या अल्पपरिचय व एका गाजलेल्या कवितेसह रेखाटण्यात आली असून त्यांची संकल्पना व मांडणी अर्थातच मधुभाईंची आहे. याच दालनात मालगुंडच्या लिमये कुटुंबियांनी दिलेल्या केशवसुतकालीन वस्तूंचे संग्रहालय आकर्षकपणे मांडण्यात आले आहे. हे काव्यदालन पुस्तकरुपाने प्रसिद्ध करून कोमसापने काव्यरसिकांची मागणी पूर्ण केली आहे.

काव्य दालनाचे समोरचे दालन

असा खुला रंगमंच असून माडाच्या बनात सुमारे हजार लोकांची आसनव्यवस्था असलेले खुले सभागृह आहे. या रंगमंचावर नुकतेच या सभागृहाचे 'पद्मश्री मधु मंगेश कर्णिक सभागृह' असे नामकरण मधुभाईंचे स्थापनेपासूनचे कोमसापतील क्रियाशी सहकारी व ९९ वर्षाचे तरुण उत्साही कार्यकर्ते डॉ. वि. म. शिंदे, रत्नागिरी यांचे शुभहस्ते करण्यात आले. स्मारक संकुलाच्या या पहिल्या टप्प्यातील बांधकामाला एप्रिल १९९३ ते मार्च १९९४-९५ पर्यंत एकूण १९,६४,०१९.५६ पैसे खर्च झाला असून त्यातून कविवर्यांचे देखणे स्मारक उभे राहिले.

म्हणजे 'कवी केशवसुत स्मारक सार्वजनिक वाचनालय व ग्रंथालय' १९९९ साली स्थापन झालेल्या या वाचलयाचे दालन प्रशस्त व सुसज्ज असून सर्व सुविधांसह परिपूर्ण आहे. 'ब' वर्ग प्राप्त झालेल्या या वाचनालयाला न २००५-०६ चा महाराष्ट्र शासनाचा डॉ. आंबेडकर 'उत्कृष्ट ग्रंथालय' पुरस्कार व राष्ट्रवादी काँग्रेस सार्वजनिक ग्रंथालय विभाग महाराष्ट्र प्रदेशचा 'ग्रंथालय सन्मान' पुरस्कार प्राप्त झाला. २००६-०७ मध्ये ग्रंथालयाचा समावेश इतर 'अ' वर्गात करण्यात आला. आज या ग्रंथालयाने संदर्भ ग्रंथासह विविध साहित्य प्रकारातील व विविध भाषेतील २७०७२ पुस्ते उपलब्ध असून १५१ नियतकालिकांसह विविध वृत्तपत्रे वाचकांसाठी उपलब्ध आहेत. याचा लाभ विद्यार्थी, ग्रामस्थांसह येणारे पर्यटकही मोठ्या संख्येने घेत असतात या वाचनालयाचे आणखी एक वैशिष्ट्य म्हणजे केवळ ५ रु वार्षिक वर्गणीत विद्यार्थ्यांना ५०/- वार्षिक वर्गणीत प्रौढांना सभासदत्व मिळते. शिवाय वसतिगृहातील व जवळच्या प्रा. शाळेतील विद्यार्थ्यांना मोफत पुस्तके वाचनासाठी पुरवली जातात. स्वाभाविकच पंचक्रोशीतील वाचकांचा चांगला प्रतिसाद लाभला आहे. ग्रंथालयातील कर्मचारी वर्गही प्रशिक्षित व उच्चशिक्षित असून सेवाभावी वृत्तीने काम करणारा आहे.

ग्रंथालयाला लागूनच प्रशस्त, हवेशीर

त्यानंतर शासनाने स्मारकाला 'क' वर्ग पर्यटन स्थळाचा दर्जा दिला. प्रादेशिक पर्यटन विकासांतर्गत योजनेतून मोठा निधीही उपलब्ध करून दिला. २०००-२००१ व २००३-०४ साली मिळालेल्या निधीतून पाणीपुरवठा जन्मघराचे नूतनीकरण प्रेक्षाग्रह सुधारणा, पेव्हिंग ब्लॉकचा फूटपाथ, काव्यशिल्पे ४ लाख २७ हजार रुपयेची कामे झाली. त्यानंतर मा. खासदार दारासिंग व मा. आमदार रामनाथ मोने यांच्या प्रत्येकी १० लाख निधीतून प्रशस्त सांस्कृतिक हॉलची व साहित्यिकांना साहित्यनिर्मितीसाठी सुविधापूर्ण निवास व्यवस्थाही केली गेली. हॉलच्याच बाजूला 'कै गंगाधर गाडगीळ स्मृती दालनही आहे. या हॉलच्या उद्घाटनप्रसंगी उद्घाटक तत्कालीन अर्थमंत्री सुनिलजी तटकरे यांनी स्मारक संकुलाच्या विस्तारीकरणासाठी व सुशोभीकरणासाठी दीड कोटीचा निधी उत्स्फूर्तपणे घोषित केला. अन् अल्पावधीतच १ कोटी २६ लाख ५३ हजार रुपयांचा निधी जिल्हाधिकाऱ्यांकडे प्राप्त झाला. यातूनच कविवर्यांच्या स्मारकाला चार चाँद लागले. आणखी झळाळी प्राप्त झाली.

प्रादेशिक पर्यटन विकास योजनेअंतर्गत निम्म्या टप्प्यातील विविध प्रस्तारित कामे मार्गी लागली. यात स्मारकासाठी संरक्षक भिंत बांधणी, संपूर्ण संकुलाचे रंगकाम पाण्याची टाकी सांडपाणी व्यवस्थश, पथदिप वर्गाचा, रंगमंचाचे सुशोभीकरण प्रेक्षाग्रहाचे नुतनीकरण व रुफिंग ही कामे करण्यात आली शिवाय केशवसुतांच्या घरासमोर कवीकट्टा दोन सुशोभित दीपमाळला तुळशीवृंदावन इ. कामे झाली तसेच सांस्कृतिक हॉलच्या बाजूला प्रशस्त

सभागृह व कार्यालय बांधण्यात आले. आणखीही काही महत्त्वाची कामे या निधीतून करण्यात आली.

याच स्मारक संकुलात मा. मधुभाईंच्या संकल्पनेतून साकारलेली केशवसुतांच्या काही प्रमुख कवितांची काव्यशिल्पे साकारलेली आहेत. त्यांचे

उद्घाटन सुप्रसिद्ध कवी'ग्रेस' यांच्या शुभहस्ते अनेक मान्यवरांच्या उपस्थितीत १९ डिसेंबर २००४ मध्ये उत्साहात संपन्न झाले. परंतु उघड्यावर असलेल्या या शिल्पावरील कविता काव्यप्रेमींना निवांतपणे वाचता यावीत यासाठी त्याच्यावर डेकोरेटीव छत बांधण्यात आले. याशिवाय या निधीतून पूर्ण झालेल्या सर्व प्रस्तावित कामांचे उद्घाटन वा अनावरण नुकत्याच २४,२५,२६ फेब्रुवारी २०१७ मध्ये झालेल्या कोमसापच्या शानदार मेळाव्यात करण्यात आले. काव्यशिल्पांच्या शेजारीच लक्षवेधी असे सुंदर 'तुतारी शिल्प' पहावयाला मिळते. प्रख्यात शिल्पकार श्री. विठोबा पांचाळ यांच्या हस्तकौशल्यातून साकारलेल्या या तुतारी शिल्पाचे उद्घाटन तथा अनावरण पद्मश्री मधुभाईंसह आमदार संजय केळकर, आमदार उदय सामंत, विठोबा पांचाळ, 'बुक गंगा डॉट कॉम'चे मंदार जोगळेकर यांचे शुभहस्ते व कोमसाप तसेच व्यवस्थापन समितीचे सर्व पदाधिकारी, साहित्यिक, यात्रस्य व विद्यार्थ्यांच्या उपस्थित अत्यंत उत्साही वातावरणात पार पडले. ''कोकण मराठी साहित्य परिषद निर्मित कवी केशवसुत स्मारक' संकल्पना व आयोजन पद्मश्री मधु मंगेश कर्णिक या स्मारकाच्या प्रवेश द्वाराशी येताच हे स्टीलमधील सुंदर शिल्प सर्वांचे लक्ष वेधून घेते. मा. मधुभाईंनी तर हे 'तुतारी शिल्प' म्हणजे सर्वसामान्य माणसातील क्रांतीचे प्रतिक असून केशवसुतांच्या तुतारी या प्रसिद्ध कवितेतून या सुंदर शिल्पाची निर्मिती झाली आहे. असे सार्थ उद्गार या शिल्पाच्या उद्घाटन प्रसंगी काढले.

याच कार्यक्रमादरम्यान काव्यदालनाशेजारील दालनात अलसेल्या 'पद्मश्री मधुमंगेश कर्णिक साहित्य' दालनाचे उद्घाटन मा. आमदार संजय केळकर, मा. आमदार उदय सामंत, मा. मधुभाई सर्व कोमसाप परिवार व ग्रामस्थांच्या उपस्थितीत संपन्न झाला. प्रवेशद्वारावरील नामफलकाचे उद्घाटनही मा. डॉ. वि.म. शिंदे यांचे शुभहस्ते झांले. यावेळी आणखी एक प्रेरणादायी घटना घडली 'बुक गंगा-डॉट कॉमचे' मंदार जोगळेकर यांनी १ लाख ३३८ रु. कीमतीची ५९६ पुस्तके स्मारक वाचनालयाला भेट दिली.

आता स्मारकाच्या विस्तारीकरणाचे व सुशोभीकरणाचे काम पूर्ण झाले आहे. स्मारक परिसर अतिशय स्वच्छ व सुंदर असून पर्यटकांना, मुलांना २ रु. व प्रौढांना केवळ ५ रुपयात स्मारकात प्रवेश दिला जातो. संपूर्ण स्मारकाची देखभाल करण्यासाठी कार्यक्षम, सेवाभावी कर्मचारीवर्ग आहे जर स्मारक संकुलाची काळजीपूर्वक व्यवस्था पाहण्यासाठी सेवाभावी वृत्तीने काम करणारी अनुभवी व जाणकार व्यक्तीची व्यवस्थापन समिती आहे. कोमसापच्या स्थापनेपासून मा. भाईंबरोबर काम करणारे श्री. अ. म. तथा अण्णा राजवाडकर हे ८६ वर्षांचे तरुण अध्यक्ष समितीला लाभले आहेत. सेवाभावी वृत्तीने, निरलसपणे व प्रामाणिकपणे काम करणारे हे अध्यक्ष समितीचे भूषण व आम्हा सर्वांचे प्रेरणास्थान आहे. स्मारकाचा सर्व व्यवहार त्यांनी ४ अत्यंत पारदर्शी ठेवला आहे.

भारताच्या गानकोकीळेपासून अनेक नामवंतांनी, साहित्यिकांनी शासनातील अनेक मंत्री, आमदार, खासदारांसह परदेशी पाहुण्यांनीही या स्मारकाला भेट देऊन स्मारकाबद्दल प्रशंसोद्गार काढले आहेत. शेक्सपियरच्या स्मारकाला भेट देऊन आलेल्यांनी या स्मारकांची शेक्सपियरच्या स्मारकाशी तुलना केली आहे. एक एकराच्या प्रशस्त जागेत उभारलेले हे प्रशस्त स्मारक! मा. मधुभाईंच्या केवळ संकल्पनेतूनच नव्हे तर अथक परिश्रमातून व प्रयत्नातून उभे राहिलेले वैशिष्टपूर्ण व नावारुपास आलेले आहे. त्यांना अनेक व्यक्ती संस्था व शासनाचेही सहकार्य लाभले ते त्यांच्या माणसे जोडण्याच्या. हे कविवर्याचे स्मारक महाराष्ट्राची अस्मिता वाढवणारे आहे. महाराष्ट्राच्या सांस्कृतिक व साहित्यिक जीवनातही मोलाची भर घालणारे आहे यात शकां नाही. केशवसुतांचे हे जन्मस्थळ तथा स्मारक संकुल केवळ एक पर्यटन स्थळ नसून साहित्यिकांची अन् साहित्यप्रेमींची ती पंढरीच आहे ! म्हणूनच दरवर्षी देशाच्या कानाकोपऱ्यातून सुमारे ४०-५० हजार पर्यटक या सरस्वती पुत्राच्या स्मृतीला वंदन करण्यासाठी स्मारकाला आवर्जून भेट देतात. आपणही या महान कवीच्या स्मृतीला वंदन करण्यासाठी अवश्य स्मारकात या. आपल्या स्वागतासाठी आम्ही उत्सुक आहोत.

येथे काम करणारे आम्ही सर्व स्वत:ला भाग्यवान समजतो! मी स्वत: गेली १४ वर्षेसलगपणे याठिकाणी कार्यवाह म्हणून स्मारकाचे काम करीत असून मा. मधुभाईंच्या कृपेने मला हे काम करता येत असल्याने मी स्वत:ला अत्यंत भाग्यवान समजते ! मधुभाईंचे ऋण व्यक्त करण्यास माझेकडे शब्दच नाहीत !! म्हणून त्यांच्या ऋणात राहणेच पसंत करते! नव वर्षाच्या सर्वांना हार्दिक शुभेच्छा..!

◆

सलाम

(कवि मंगेश पाडगावकरांच्या कवितेचा आधार घेऊन कोकणच्या होळी सणावर आधारित एक काव्य)

सलाम होळी को सलाम !
जो आहे पुजारी त्याला सलाम !
फाकांच्या भयाने डावा हात कानशिलावर ठेऊन उजव्या हाताने सलाम !
होळी वाल्यांना सलाम!
होळी न करणाऱ्यांना सलाम !
होळीला न जाता घरात लपून बसणाऱ्यांना सलाम!
सलाम भाई और बहनों सबको सलाम !!

ज्याने लावली झाडे त्याला सलाम!
ज्याची झाडे त्याला सलाम !
ज्याच्या हाती कुऱ्हाड त्यालाही सलाम!
होळीच्या नावाखाली लाखोंची झाडे तोडणाऱ्यांना सलाम !
तोडलेल्या झाडांची होळीच्या नावाखाली
लोंब करणाऱ्यांना सलाम!
गजबजलेल्या जंगलांचे उध्वस्त वाळवंट करणाऱ्यांना सलाम!
तोडलेल्या प्रत्येक होळीला सलाम !
सलाम प्यारे भाई और बहनों सबको सलाम!!

होळीसाठी रजा टाकून गावी येणाऱ्या,
प्रत्येक चाकरमान्यांला सलाम!
त्यांना रजा देणाऱ्या साहेबांनाही सलाम!
आलेल्या चाकरमान्याकडे होळीचे,
पोस्त मागणाऱ्यांना सलाम!
आणि पोस्त देणाऱ्या पैसेवाल्यांनाही सलाम!

होळी नाचविणाऱ्या सर्व भाविक आस्तिकांना सलाम!
भांडणे लावून देणाऱ्या आणि
मजा बघणाऱ्या नास्तिकांनाही सलाम !
होळीसाठी रंगांचे सेलीब्रेट करणाऱ्यांना सलाम !
रंग निर्मितीदारांना सलाम!
त्या रंगापासून घातक हानी होणाऱ्या
प्रत्येक बापड्यांना सलाम!
वर्षभर फटाके विकणाऱ्यांना सलाम!
फटाक्यांनी चिडणाऱ्यांना सलाम!
मौजमस्ती करणाऱ्यां ना सर्वांना सलाम!
सलाम प्यारे भाई और बहनों सबको सलाम!
तासे, ढोल, झांजवाल्यांना सलाम!
ढोल-ताशांसाठी ज्या प्राण्यांची,
कातडी वापरली गेली, त्या प्राण्यांना आणि
ती कातडी लावणाऱ्यांनाही सलाम!
होळीच्या नावाखाली मदिरेची विक्री करणाऱ्या,
आणि मदिरेची धुंदी चढणाऱ्या,
सर्व बांधवाना सलाम!
मानवाच्या आनंदाची आणि पोटाची
खलगी भरण्यासाठी, बेधडक बळी जाणाऱ्या
त्या निष्पाप बकरी, मेंढी आणि बिचाऱ्यांना..
कोंबड्यांना माझे कोटी कोटी प्रणाम !
पैशापोटी कत्तल करणाऱ्यांना,
ज्या माझ्या कसाई बांधवासाठी सलाम।
सलाम प्यारे भाई और बहनों
सबको सलाम!
दारु ढोसून दादागिरी करणाऱ्या,
गल्ली बोळातील प्रत्येक दादाला सलाम!
या दादांची टर खेचणाऱ्यां सर्व
टोळक्यांनाही सलाम!
दानवांना सलाम, भूतांना सलाम!
पृथ्वीवरील सर्व देवदेवतांना सलाम!
त्या देवतांच्या पालख्यांना सलाम!
त्यांच्या निशाणांना सलाम!
पुजाऱ्यांना सलाम आणि
देवाच्या नावाखाली भोंदूगिरी करणाऱ्यां
चमत्कारी बाबानांही सलाम!
सलाम प्यारे भाई और बहनों सबको सलाम!!

ज्यांच्या अंगी गुरवपण त्याला सलाम!
दिवसभर होळीला तोरणे, बांधणाऱ्यांना सलाम!
लोकांचे नवस करणाऱ्या

त्या गुरवालाही सलाम!
केलेले नवस मानवणाऱ्या, पुजाऱ्याला सलाम!
आणि मानवलेल्या नवसांची विल्हेवाट लावणाऱ्या
प्रत्येक भाविकाला सुद्धा सलाम!
सलाम भाई और बहनों सबको सलाम!!
दहा दिवस आनंदाने होळी खेळा म्हटलं तर,
डोकी फोडतील !
बरं चाललंय म्हणून शेफारू नका म्हटले तर
रस्त्यावर झोडतील !
शिमग्याचे फाक (उखाणे) घातले तर,
वाटा रोखतील !
मान-पाना बद्दल बोललो तर
'फुलटॉस' समजून ठोकतील!
म्हणून आधी माझ्या भाबड्या प्रेमाला सलाम !
ओम् म्हणू शकणाऱ्या
प्रत्येक तोंडाला सलाम!
सू-बेभखसी सु-परंपरेला सलाम!
सलाम प्यारे भाई और बहनों सबको सलाम!

अनेक हात असते तर
अनेक हातांनी दिले असते दान!
लेकिन माफ करना भाईयों,
हात तर दोनच!
आणि त्यातला डावा हात,
लोक पोस्त मागतील म्हणून,
पॅन्टीच्या खिशात ठेवलेला!
म्हणून फक्त उजव्या हाताने देतो, शुभेच्छाचे दान!
आणि... आणि एक कडक सलाम !
सलाम प्यारे भाई और बहनों सबको,
सलाम !!

स्व. संतोष लाखण
सीमा शुल्क कार्यालय, रत्नागिरी

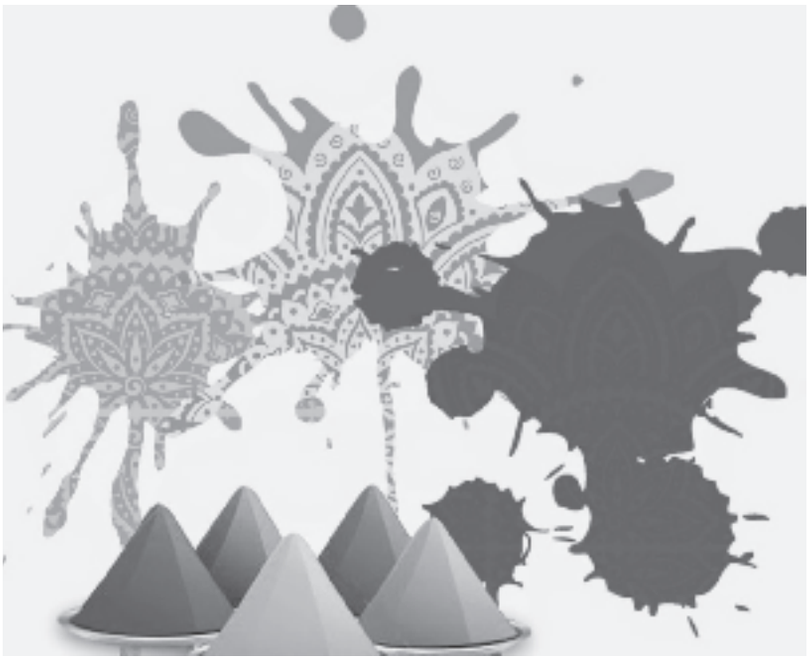

अंधश्रद्धा

अंधश्रद्धा म्हणजे एखादी आंधळी श्रद्धा होय.

आपण आपल्या जीवनात बऱ्याच अशा गोष्टी ऐकतो किंवा पहातो देखील.

उदा. अनेक ठिकाणी गावो-गावी देव देवस्कीच्या गोष्टी चालल्या असतात. एखाद्याच्या घरी सतत भांडण असेल किंवा त्या घरातला कमवणारा व्यक्ती अचानक जर काही कारणास्तव आपली नोकरी धंदा सोडून घरी बसला. तरी घरातली वडीलधारी माणसं लगेच देवाकडे धाव घेतात. मग देवाजवळ आपले गाऱ्हाणे मांडतात. देवाला कौल प्रसाद लावतात. ह्यालाच अंधश्रद्धा म्हणतात आणि मग जे काही देव सांगेन त्या पद्धतीने वागायला सुरुवात करतात ही पण अंधश्रद्धाच आहे. देव काही बोलत नाही आणि देव काही सांगत नाही. देवाचे खोटे भक्त पैसा कमविण्यासाठी हा उद्योग करतात आणि देवाची आंधळे पणाच म्हणायला पाहिजे. हा असा विचित्र प्रकार बऱ्याच ठिकाणी पहायला किंवा ऐकायला ही मिळतो.

तर आता आपण असा विचार करायचा की हे कितपत खरं आहे ते!

ह्याच अंधश्रद्धेने माणसाच्या प्रगतीचा घात केला आहे.

आपण जर जीवनात प्रयत्नच नाही केले तर आपल्या जीवनाला यश मिळेल का? आपण जर शांतपणाने संपूर्ण जीवनाचा विचार केला तर सर्व काही जिंकू शकतो आणि या सर्व अंधश्रद्धेवर विश्वास न ठेवता आपले अनुभवाचे गाठोडे असेच पुढे-पुढे जात राहावे.

हेच माझे म्हणणे माणसाने आपल्या कर्तृत्वावर विश्वास ठेवावा.

– अरुण पुंडलिक माळकर
रत्नागिरी कोंकण रेलवे

कोकणची माती आणि माणसं

माझ्या कोकणच्या मातीची
ओढ लय न्यारी...
किती हाकला मनाला
परि येतेची माघारी....
माझ्या कोकणाच्या माणसांत
आंब्या-फणसाची गोडी
वर दु:खाचा डोह
आत सुखाची बुडी
माझ्या कोकणची माती
आणि कोकणची माणसं
वरवर रेताड - बिताड
आंत मुरलेलं लोणचं
माझं कोकण अडनीडं
देवा - परमेशाचं दानं
इथं, माती अन् माणसांत
त्यानं दडविलं सोनं
नदी-व्हाळांच्या कडंला
गावागावाचं नांदणं
गावा-शिवारात पसरतं
आपलेपणाचं चांदणं

कोकणच्या निसर्गाचं
लय अजीब वागणं
एका हातानं दिलं, अन्
दुसऱ्या हातानं नेलं
मातृभक्त, देशभक्त
आणि विश्वउद्धारक होऊनी
इथं जन्मले सुर्यपूत्र
धन्य कोकणची भूमी
इथं कलेचा जागर
आणि मायेला पाझर
माझ्या मातीला-माणसांना
नाही, कशा-कुणाचीही सर
सह्याद्रीच्या कुशीबाहेर असतील
बारा बाजांची गावं, पण
माणूसकीच्या जगण्याला
माझ्या कोकणचंच नाव

– प्रा. सचिन सनगरे

बैठक की झलकियां...

हिंदी दिवस पर आयोजित प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण

बैठक की झलकियां...

हिंदी दिवस पर आयोजित प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण

बैठक की झलकियां...

समिति के वेबसाइट का प्रारंभ

हिंदी पत्रिका राजभाषा रत्नसिंधु का विमोचन

प्रथम, कोंकण रेलवे

शील्ड प्रतियोगिता 2015-16

द्वितीय, आकाशवाणी

तृतीय, सीमा शुल्क कार्यालय

प्रोत्साहन, इंडियन ओवरसीस बैंक

रत्नागिरी का दीपगृह

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी

बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, शिवाजीनगर, रत्नागिरी - 415 639 (महाराष्ट्र)